â

अनुक्रमणिका

- इस्लाम का उदय.....3
- अरबों की सिन्ध विजय.....4
- तुर्कों का उदय एवं भारत पर आक्रमण.....4
- दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526 7
- दिल्ली सल्तनत : विविध.....23
- क्षेत्रीय राज्य.....23
- धार्मिक आंदोलन.....27
- मुगल वंश (1526 ई. - 1857 ई.).....33
- उत्तर मुगलकाल (1707 ई. - 1857 ई.).....46
- मराठा.....56
- पेशवा काल.....59

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

🚀 All-in-One Best Hindi PDF Notes – सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सम्पूर्ण समाधान 🟦

📥 अभी जॉइन करें ⬇️

★★★★★ 1,000+ छात्रों द्वारा प्रमाणित

📕 600+ PDF Notes सभी विषयों के लिए उपलब्ध

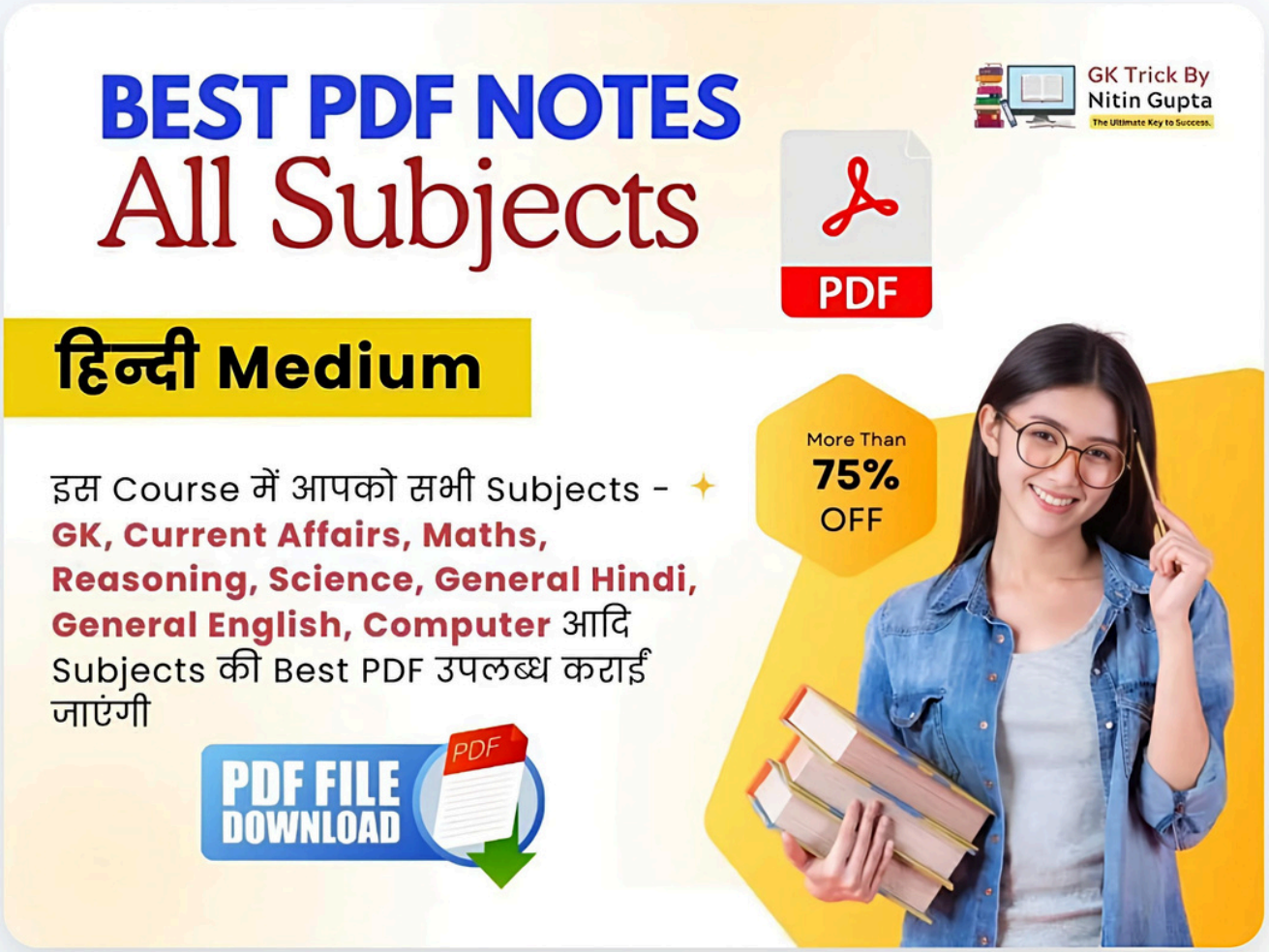

🎁 अब 75% छूट + सभी PDF मोबाइल में Download करें!

मध्यकालीन भारत का इतिहास

इस्लाम का उदय

- इस्लाम अरबी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। ये हैं सल्म (शांति) एवं सिल्म (समर्पण)।
- इस्लाम धर्म का उदय अरब देश में हुआ।
- इस्लाम धर्म के उदय के पहले अरब में बहुदेववाद एवं मूर्तिपूजा का प्रचलन था।
- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मुहम्मद साहब थे।
- मूर्तिपूजा का विरोधी है।
- इस्लाम के अनुयायियों को मुसलमान कहा जाता है। इनका पवित्र ग्रंथ कुरान शरीफ है।

मुसलमानों के 5 कर्तव्य

1. **कलमा :** अल्लाह पर पूर्ण विश्वास प्रकट करना।
2. **नमाज :** प्रत्येक मुसलमान को दिन में 5 बार नमाज पढ़ना चाहिए।
3. **रोजा :** रमजान के महीने में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अन्न-जल ग्रहण किये बिना अल्लाह की इबादत करना।
4. **जकात :** अपनी आय का 2.5% (ढाई) गरीबों में दान करना।
5. **हज :** प्रत्येक मुसलमान को जीवन में कम से कम एक बार मक्का की यात्रा करनी चाहिए।

- पैगम्बर मुहम्मद साहब प्रथम मुस्लिम राज्य की स्थापना की और मदीना को केन्द्र बनाकर मुसलमानों पर शासन किया।
- पैगम्बर साहब ने धर्मराज्य अर्थात् खिलाफत की स्थापना की।
- पैगम्बर साहब के बाद खिलाफत (धर्मराज्य) के प्रभुख को खलीफा कहा गया।

पवित्र खलीफा

- पैगम्बर साहब के बाद चार पवित्र खलीफा हुए। ये चारों पैगम्बर साहब के साथी रह चुके थे तथा सर्वसम्मति से इन्हें खलीफा चुना गया अतः ये पवित्र खलीफा कहलाये।
- पवित्र खलीफाओं की राजधानी मदीना थी।

1. अबूबक्र - 632-634 ई.

- ये प्रथम खलीफा थे इन्होंने अल्लाह को केन्द्र में रखकर मुसलमानों पर शासन किया एवं इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार किया।

2. हजरत उमर-634-644 ई.

- इनके समय में विजय अभियान बहुत सफल रहे। इन्होंने ईरान, ईराक, मिस्र, सीरिया आदि क्षेत्रों को जीतकर खिलाफत में सम्मिलित किया।
- इन्हीं के समय में 636 ई. में अरबों का भारत पर पहला आक्रमण हुआ जो असफल रहा।

3. हजरत उस्मान- 644-656 ई.

- इनके समय में 651 ई. में पवित्र धर्मग्रंथ कुरान शरीफ का संकलन हुआ। यह ग्रंथ अरबी भाषा में संकलित है।

4. हजरत अली-656-661ई.

- इनके समय में भी विजय अभियान चलते रहे।

5. उमैय्या वंश 661-749 ई.

- 661 ई. में अली की मृत्यु के बाद मुबैय्या नामक व्यक्ति ने अली के पुत्र हसन को हटाकर स्वयं खलीफा बन गया।
- उमैय्या वंश की राजधानी दमिश्क थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अब्बासी वंश - 749-1258 ई.

- 749 ई. में अब्बास सफ्फाह ने ईरानियों के सहयोग से उमैय्या वंश का अंत करके अब्बासी वंश की स्थापना की।
- अब्बासी वंश की राजधानी बगदाद थी।
- इस वंश का अंतिम खलीफा मुस्तकीम थे।

अरबों की सिन्ध विजय

- 711 ई. में खलीफा वालिद के उत्तरी क्षेत्र (ईरान) के गवर्नर अल-हज्जाज ने खलीफा से सिंध अभियान की अनुमति प्राप्त कर ली।
- सर्वप्रथम 711 ई. में उबैदुल्ला के नेतृत्व में एक अभियान सिंध भेजा गया, किन्तु यह पराजित हुआ और मारा गया।
- दूसरा अभियान बुदैल के नेतृत्व में हुआ लेकिन यह भी असफल रहा।
- तीसरा अभियान 712 ई. मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के शासक दाहिर को पराजित किया। दाहिर युद्ध करते हुए मारा गया।

अरबों की सिंध विजय के कारण

अरबों के सिंध विजय के अनेकों कारण थे—

1. **राजनीतिक कारण-** मुस्लिम राज्य का विस्तार।
2. **आर्थिक कारण-**भारत समृद्ध देश था अतः यहां अधिकार करके धन प्राप्त करना।
3. **इस्लाम धर्म का प्रचार-**प्रसार करना
4. **तात्कालिक कारण-**कुछ अरबी जहाजों का समुद्री डाकुओं द्वारा लूटा जाना।

अरबों की विजय का प्रभाव

1. **राजनीतिक प्रभाव-** अरबों की प्रशासनिक नीतियां मध्य युग के तुर्क, अफगान, मुगल साम्राज्य के लिए भी मार्ग दर्शन का कार्य करती रहीं।
2. **आर्थिक प्रभाव-** भारत में खजूर की बागवानी एवं ऊंट पालन का अधिक विकास।
   - — चर्म शिल्प को प्रोत्साहन
   - — मुद्रा प्रणाली का विकास
   - — नगरीकरण अनेक नये नगरों का विकास हुआ।
3. **सामाजिक प्रभाव-** सामाजिक समानता का विकास हुआ। ऊंच-नीच, वर्ग-भेद में कमी। पर्दा प्रथा प्रारम्भ।
4. **सांस्कृतिक प्रभाव-** सिंधी भाषा का विकास हुआ। भारत में कुरान का सर्वप्रथम अनुवाद सिंधी भाषा में हुआ।
   - — सैकड़ों अरबी विद्वान चिकित्सा, दर्शन, गणित आदि की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत आये।
   - — अनेक भारतीय ग्रंथों का अरबी में अनुवाद हुआ, आयुर्वेद, सूर्यसिद्धातिंका, सुश्रुत संहिता, पंचतंत्र आदि का अरबी में अनुवाद हुआ।

तुर्कों का उदय एवं भारत पर आक्रमण

- तुर्क मध्यएशिया की खानाबदोश जनजाति थी।
- अब्बासी खलीफाओं के समय ये लोग महल रक्षक और पेशेवर सैनिक के रूप में नियुक्त होने लगे।
- इसी समय ईरान, ईराक क्षेत्र में समानिद राज्य का उदय हुआ।
- आगे चलकर समानिद राज्य कमजोर हुआ। उसका लाभ उठाकर गजनी को केन्द्र बनाकर अलप्तगीन ने तुर्कों के प्रथम स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अलप्तगीन (962 - 977) ई.

- इसकी राजधानी गजनी थी।
- अलप्तगीन ने 1700 चुने हुए तुर्क अधिकारियों को नियुक्त किया। इनमें से एक सुबुक्तगीन था।
- अलप्तगीन के बाद सुबुक्तगीन शासक बना।

सुबुक्तगीन (977-997 ई.)

- दूसरा तुर्क शासक सुबुक्तगीन था।
- कुछ दिनों बाद सुबुक्तगीन ने जयपाल के राज्य में आक्रमण करके लूटपाट किया।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद इसके दो पुत्रों—

  1. अब्दुल काशिम महमूद
  2. इस्माइल

  दोनों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें अब्दुल काशिम महमूद विजयी हुआ और अब्दुल काशिम महमूद गजनवी के नाम से शासक बना।

महमूद गजनवी (998-1030 ई.)

- महमूद गजनवी गद्दी पर बैठने के एक वर्ष के अन्दर ही बगदाद के अब्बासी खलीफा अलकादिर बिल्लाह से गजनी के शासक के रूप में मान्यता प्राप्त कर ली।
- अल कादिर बिल्लाह ने महमूद गजनवी को अमीन-अल-मिल्लत (मुसलमानों का रक्षक) और यामिनउद्दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ) की उपाधि प्रदान की।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

भारतीय अभियान

- महमूद गजनवी एक हजार ई. से 1027 ई. तक भारत में कुल 17 बार आक्रमण किया।
- इसका पहला अभियान 1000 ई. में हुआ जब इसने सीमा के कुछ क्षेत्रों को विजित किया।
- दूसरा अभियान 1001 में हुआ जब इसने हिन्दू शाही वंश के राजा जयपाल के विरुद्ध आक्रमण किया।
- जयपाल इस पराजय के अपमान को सहन नहीं कर सका और स्वयं निर्मित चिता में जलकर आत्महत्या कर ली।
- 1006 ई. में गजनवी ने मुल्तान पर आक्रमण किया और यहां पर करमाथी वंश के शासक अब्दुल फतेह दाउद ने बिना युद्ध किये ही आत्म समर्पण कर दिया। इस तरह मुल्तान पर महमूद गजनवी का अधिकार हुआ।
- 1008 ई. में पुनः इसने हिन्दू शाही राज्य पर आक्रमण किया और यहां के शासक आन्दपाल को वैहन्द के पास पराजित किया।
- इस विजय के बाद महमूद गजनवी ने सिन्ध पर अधिकार किया।
- 1018 ई. में इसने गंगा घाटी में प्रवेश किया और यहां पर गुर्जर प्रतिहार राजा राज्यपाल द्वारा शासित कन्नौज राज्य पर आक्रमण किया।
- महमूद गजनवी का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण था 1024-25 में सोमनाथ पर आक्रमण। इस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था। 3 दिनों के भीषण युद्ध के बाद इसने सोमनाथ के मंदिर पर अधिकार कर लिया और मंदिर को तोड़कर विपुल सम्पत्ति प्राप्त की।
- 1025 ई. में सोमनाथ से वापस जाते समय सिन्धु नदी की निचली घाटी में जाटों ने इसका मार्ग अवरुद्ध किया। इस समय यह रक्षात्मक कार्यवाही करके गजनी चला गया।
- 1027 ई. में महमूद गजनवी का अन्तिम आक्रमण हुआ। यह आक्रमण जाटों के विरुद्ध एक तरह से दण्डात्मक अभियान था। इसमें इसने जाटों को कठोरता से दमन किया और वापस चला गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

महमूद गजनवी के प्रमुख भारतीय अभियान		
✸ महमूद गजनवी भारत में कुल 17 बार आक्रमण किये जिनमें महत्वपूर्ण हैं—		
वर्ष	**राज्य/स्थान**	**राजा**
1. 1001-2 ई. में	हिन्दुशाही/राज्य	जयपाल
2. 1005-6ई. में	मुल्तान	अब्दुल फतेह दाउद
3. 1008-9	हिन्दुशाही राज्य	आनंदपाल
4. 1012-13	थानेश्वर	राजाराम
5. 1018-19	कन्नौज	राज्यपाल
6. 1020-21	कालिंजर	विद्याधर
7. 1024-25	सोमनाथ	भीम प्रथम

महमूद गजनवी के आक्रमण का प्रभाव

1. भारतीय राजाओं को पराजित कर भारतीय राजनीति की कमजोरी को उजागर कर दिया।
2. पंजाब सिंध एवं मुल्तान में गजनवी गवर्नरों की नियुक्ति कर मुस्लिम शासन की स्थापना।
3. भारत में विदेशी आक्रमण का द्वार खोल दिया।
4. भारतीय कला को नष्ट किया।
5. भारत का धन गजनी ले गया।

मुहम्मद गोरी

- 12वीं शताब्दी के मध्य में गोर वंश का उदय हुआ। इनके साम्राज्य का आधार उत्तर पश्चिम अफगानिस्तान था।
- प्रारम्भ में गोरी लोग गजनी के अधीन थे बाद में यह स्वतंत्र हो गये।
- 1163 ई. में गयासुद्दीन बिन साम गौर वंश का शासक बना इसने गजनी पर आक्रमण करके इसे विजित कर लिया और अपने छोटे भाई मुहम्मद गोरी को गजनी दे दिया।
- मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण 1175 ई. मुल्तान पर हुआ यहां इसने करमाथियों को पराजित कर अपना अधिकार स्थापित किया। यह इसकी पहली विजय थी।
- 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक भीम द्वितीय था।
- कशहद के मैदान में गोरी की करारी हार हुयी। यह भारत में इसकी पहली पराजय थी इस पराजय के बाद मुहम्मद गोरी ने मुल्तान एवं सिन्ध के मार्ग को बदलकर पंजाब के मार्ग को चुना।
- 1181 ई. में इसने पंजाब पर आक्रमण किया। यहां पर गजनी वंश का खुशरो मलिक शासक था। इसने युद्ध के स्थान पर मुहम्मद गोरी को अत्यधिक उपहार देकर सन्धि कर ली।
- 1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी पराजित हुआ और गजनी चला गया।
- 1192 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ और बन्दी बना लिया गया। इसने गोरी की अधीनता स्वीकार कर ली परन्तु बाद में विद्रोह कर दिया और मारा गया।

मुहम्मद गोरी के भारतीय अभियान		
वर्ष	**राज्य स्थान**	**राजा/वंश**
1 1175 ई.	मुल्तान	करमाथी वंश
2. 1178 ई.	गुजरात	भीम द्वितीय
3. 1181 ई.	पंजाब	खुशरोमलिक
4. 1186 ई.	पंजाब	खुशरोमलिक
5. 1191 ई.	तराईन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज चौहान
6. 1192 ई.	तराईन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज चौहान
7. 1194 ई.	कन्नौज (चंदावर का युद्ध)	जय चन्द्र
8. 1195 ई.	बयाना	कुमारपाल
9. 1205 ई.	खोक्खरों से युद्ध	—

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1194 में गोरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक जयचन्द था। चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी से जयचन्द पराजित हुआ और मारा गया। इस युद्ध के बाद कन्नौज और वाराणसी पर गोरी का अधिकार हो गया।

मुहम्मद गोरी के सेनापतियों द्वारा विजित क्षेत्र

1. कुतुबुद्दीन ऐबक -1196-अजमेर विजय
   1197 बदायूं विजय
   1202-3-बुंदेलखंड विजय
2. बख्तियार खिलजी-1197 - बिहार विजय
   1205 - बंगाल विजय

महत्वपूर्ण तथ्य

- महमूद गजनवी यामिनी वंश से सम्बन्धित तुर्क था।
- महमूद गजनवी कश्मीर अभियान किया था लेकिन यह अभियान असफल रहा।
- अलबरूनी (बाहरी) का वास्तविक नाम अबू रैहान था। यह ख्वारिज्म का रहने वाला था लेकिन गजनी में बस गया था।
- अलबरुनी भारत में आकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया।
- मुहम्मद गोरी शंसबानी वंश का तुर्क था। इसका वास्तविक नाम शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी था।
- मुहम्मद गोरी का साधारण सेनापति बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला बौद्ध विहार नालंदा बौद्ध विहार एवं सोमपुर बौद्ध विहार को तहस-नहस करके सैकड़ों भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया।
- मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक को हांसी की इक्ता प्रदान किया था। 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित भारतीय प्रदेशों का प्रतिनिधि शासक नियुक्त किया।

दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526

- दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत 1206 से 1526 तक इतिहास का अध्ययन किया जाता है। इन 320 वर्षों के इतिहास में पांच वंशो ने शासन किया।

सल्तनत के राजवंश

1. गुलाम वंश	-	(1206-1290)
2. खिलजी वंश	-	(1290-1320)
3. तुगलक वंश	-	(1320-1414)
4. सैय्यद वंश	-	(1414-1451)
5. लोदी वंश	-	(1451-1526)

गुलाम वंश

- इस वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक गोरी का दास था इसलिए इस वंश को दास या गुलाम वंश के नाम से जाना जाता है।
- कुछ विद्वान इसे मामलूक वंश का नाम देते हैं। जिसका तात्पर्य है स्वतन्त्र माता पिता की गुलाम सन्तान। इसे आरम्भिक तुर्क वंश के नाम से भी जाना जाता है।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

- यह दिल्ली सल्तनत का संस्थापक एवं मुहम्मद गोरी का दास था। मुहम्मद गोरी ने अपने दासों को पुत्र की तरह माना।
- गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक 1206 में स्वतंत्र शासक बना और लाहौर को अपनी राजधानी बनायी।
- जब यह स्वतंत्र शासक बना तब दासता से मुक्त नहीं था इसलिए इसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की उपाधियों के साथ शासन किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1208 में ऐबक गजनी गया यहीं पर मुहम्मद गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने इसे दासता का मुक्ति पत्र भेजा और उसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।
- मिन्हाज-उस-सिराज ने इसे हातिमताई कहा है।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान का खेल खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई।
- इसकी मृत्यु के बाद इसके तथाकथित पुत्र आरामशाह को लाहौर में गद्दी पर बैठाया गया जो इल्तुतमिश से पराजित होने से पहले 8 महीने तक शासन किया।

ऐबक की उपाधियां

- लखा या लाखबख्श
- हातिमताई
- कुरान ख्वां

ऐबक के दरबारी विद्वान

1. हसन निजामी
2. फख्र-ए-मुदाब्बिर

इल्तुतमिश (1211-1236) ई.

- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दास था। ऐबक अपनी दासता से मुक्ति से पहले ही 1206 में इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश सुल्तान बनने से पहले बदायूं का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाई।

1. चंगेज खां की समस्या

1220-21 ई. में मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खां ख्वारिज्म के राजकुमार जलालुद्दीन मांगबर्नी का पीछा करते हुए भारत की सीमा तक आ पहुंचा। इल्तुतमिश ने मांगबर्नी को शरण न दे कर चंगेज खां के आक्रमण से अपनी रक्षा की।

2. नासिरुद्दीन कुबाचा की समस्या

कुबाचा सिन्ध एवं मुल्तान का प्रभारी था। इसने लाहौर पर अधिकार कर लिया था। 1217 में मंसूरा के युद्ध में इल्तुतमिश ने कुबाचा को पराजित करके लाहौर छीन लिया। 1227 में इल्तुतमिश सिन्ध मुल्तान पर आक्रमण करके कुबाचा को पराजित किया। कुबाचा अपने जीवन की रक्षा के लिए सिन्धु नदी में कूद गया और डूबकर मर गया।

3. बंगाल विजय

- इस समय बंगाल का शासक गयासुद्दीन स्वतंत्र रूप से शासन कर रहा था। 1226 में इल्तुतमिश के पुत्र नासिरूद्दीन महमूद ने बंगाल पर आक्रमण किया। युद्ध में गयासुद्दीन पराजित हुआ और मारा गया। इस तरह बंगाल पर इल्तुतमिश का अधिकार हुआ। इल्तुतमिश ने नासिरूद्दीन को यहां का सूबेदार नियुक्त किया। 1229 ई. में नासिरूद्दीन की मृत्यु हो गयी।
- इल्तुतमिश ने तुर्की अमीरों के एक विशिष्ट वर्ग का गठन किया जिसमें उसके 40 विशिष्ट अमीर सम्मिलित थे इन्हें तुर्क-ए-चिहलमानी या दल चालीसा के नाम से जाना जाता था।
- 1229 में इल्तुतमिश बगदाद के अब्बासी खलीफा अलमुस्तान सिंर बिल्लाह से मंसूर प्राप्त किया। खलीफा ने इसे सुल्तान-ए-आजम (महान शासक) की उपाधि दी।
- इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी प्रकार के सिक्के प्रचलित किये जिसमें चांदी के टंका तथा तांबे की जीतल नामक मुद्रा थी।
- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Nitin-Gupta.com

इल्तुतमिश की प्रमुख विजयें

- **1215 ई.** : तराईन के तृतीय युद्ध में ताजुद्दीन एल्दौज को पराजित किया।
- **1217 ई.** : मंसुरा के युद्ध में नासिरुद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 ई.** : बंगाल विजय की यहां के शासक गयासुद्दीन को पराजित किया।
- **1227 ई.** : सिंध एवं मुल्तान विजय नासिरूद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 से 1231 तक** : राजपूतों पर विजय।
- **1235** : पंजाब के खोक्खरों पर विजय।

तुर्क-ए-चिहलगानी/दल चालीसा

- इसकी स्थापना इल्तुतमिश ने किया था। इसमें इसके विश्वासपात्र अमीर होते थे। जिन्हें बड़े-बड़े पद दिये जाते थे। यह एक प्रशासनिक वर्ग था।

इल्तुतमिश द्वारा प्रचलित सिक्के

1. **टंका** - यह चांदी का सिक्का था।
2. **जीतल** - यह तांबे का सिक्का था। इनमें 1 : 48 का अनुपात था।

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी (1236-1266)

- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दल चालीसा और इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के बीच भीषण राजनीतिक संघर्ष शुरू हुआ। इस समय दल चालीसा सुल्तान निर्माता की भूमिका अदा कर रहे थे।
- 1236 से 1266 तक के काल को चालीसा का काल कहा जाता है।

रुकनुद्दीन फिरोज शाह (1236-36 तक)

- इल्तुतमिश अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था लेकिन तुर्की अमीरों ने इसकी इच्छा का सम्मान नहीं किया और इसके पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज शाह को सुल्तान बनाया। सुल्तान की माता शाहतुर्कान थी।
- शाह तुर्कान विद्वानों एवं शेखों को दान दिया करती थीं।

रजिया (1236-40)

- शाहतुर्कान के आंतक से परेशान होकर रजिया एक दिन लाल वस्त्र धारण (न्याय की याचना का प्रतीक था) कर जुमा के दिन नमाज के समय जनता के बीच में पहुंची और न्याय की मांग की।
- दिल्ली की जनता ने राजमहल पर धावा बोलकर शाहतुर्कान और रुकनुद्दीन को बन्दी बना लिया और रजिया सुल्तान बनी।
- रजिया दिल्ली की पहली और अन्तिम महिला सुल्तान थी। इसे अपने शासन के प्रारम्भ से ही तुर्की अमीरों के विरोध का सामना करना पड़ा।

रजिया : एक दृष्टि में

- रजिया दिल्ली की प्रथम एवं अंतिम महिला सुल्तान थी।
- रजिया ने जमालुद्दीन याकूत को प्रोन्नत करके अमीर-ए-आखूर (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त किया।
- तुर्की अमीरों ने रजिया का जमालुद्दीन याकूत से प्रेम सम्बन्ध का अफवाह फैलाया।
- रजिया के विरुद्ध षड्यंत्रकारियों का नेता इख्तियारुद्दीन ऐतगिन था।
- रजिया तबरहिन्द के सूबेदार अल्तूनिया से पराजित हुई और अंततः दोनों ने विवाह कर लिया।
- 1240 में कैथल के निकट रजिया एवं अल्तूनिया की हत्या कर दी गई।

बहरामशाह (1240-42)

- इस समय राज्य की सारी शक्ति ऐतगिन के हाथ में थी। 1241 ई. में मंगोल नेता तायर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण हुआ। मंगोल पराजित हुए और भाग गए।

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1242 ई. में बहरामशाह की हत्या कर दी गयी।

अलाउद्दीन मसूदशाह (1242 - 46)

- यह रुकनुद्दीन फिरोज शाह का पुत्र था। 1246 में इसे कारागार में डाल दिया गया और वहीं इसकी मृत्यु हो गई।

नासिरुद्दीन महमूद शाह (1246 - 66)

- यह इल्तुतमिश के पुत्र नासिरुद्दीन महमूद का पुत्र था।
- यह सन्त प्रवृत्ति का सुल्तान था। यह एक अच्छा लेखक था। समय व्यतीत करने के लिए यह कुरान की प्रतियां लिखा करता था। इससे सर्वत्र यह प्रचलित हो गया कि सुल्तान कुरान की प्रतियां बेच कर अपना जीवन यापन करता है।
- 1246 में इसने बलबन को अपना वजीर बनाया।

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी 1236-66 ई.	
1. रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236-36)	इल्तुतमिश का पुत्र
2. रजिया (1236-40)	इल्तुतमिश की पुत्री
3. बहरामशाह (1240-42)	इल्तुतमिश का पुत्र
4. अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)	रुकनुद्दीनफिरोजशाह का पुत्र
5. नासिरुद्दीन महमूदशाह (1246-66)	इल्तुतमिश का पौत्र या नासिरुद्दीन महमूद का पुत्र।

बलबन (1266-86)

- बल्बन इल्तुतमिश का दास था। इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के समय में यह सत्ता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचा।
- बलबन दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने अपने राजत्व सिद्धान्त की विवेचना की। इसका सिद्धान्त फारस से ग्रहण किया गया था।
- उसने सुल्तान को पृथ्वी पर नियावत-ए-खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि) और जिल्ले अल्लाह (ईश्वर की छाया) बताया।
- इसने कुलीनता पर अत्यधिक बल दिया। अपनी वंशावली बनवायी और अपने को फारस के पौराणिक नायक अफरासियाब का वंशज बताया।
- बलबन ने अपने दरबार का गठन ईरानी परम्परा के अनुसार किया। इसने दरबार में सिज्दा और पायबोस की परम्पराऐं प्रारम्भ की।
- इसने ईरानी त्योहार नौरोज को मनाना शुरू किया।
- बलबन ने तुर्क-ए-चिहलगानी अर्थात् दल चालीसा पर घातक प्रहार करके इसका अन्त कर दिया।
- फारसी के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने अपना साहित्यिक जीवन इसी के शासन काल से प्रारम्भ किया था जो 7 सुल्तानों के दरबार में रहे।

गुलाम वंश से सम्बन्धित मुख्य तथ्य

- मुहम्मद गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने कुतुबुद्दीन ऐबक को 1208 में दासता से मुक्ति प्रदान की।
- प्रसिद्ध सूफी संत बहाउद्दीन जकारिया ने मुल्तान एवं सिन्ध विजय में कुबाचा के विरुद्ध इल्तुतमिश की मदद की थी।
- इल्तुतमिश ने ग्वालियर विजय के उपलक्ष्य में रजिया के नाम का टंका जारी किया था।
- इल्तुतमिश भारत का प्रथम सुल्तान था।
- बलवन ने अपने एक सैनिक अधिकारी अली को तुगरिल कुश की उपाधि प्रदान की थी।
- 'गुलाम का गुलाम' इल्तुतमिश को कहा गया था।
- मंगोल नेता चंगेज खान का मूल नाम 'तेमुचिन' था।
- गढ़मुक्तेश्वर की मस्जिद की दीवारों पर अपने शिलालेख में बलबन ने स्वयं को 'खलीफा का सहायक' कहा है।

खिलजी वंश (1290-1320)

- दिल्ली सल्तनत में खिलजियों का शासन काल सबसे कम समय तक था।
- खिलजी तुर्कों की 64 नस्लों में से एक थे लेकिन यह निम्न वर्ग के तुर्क थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

जलालुद्दीन खिलजी 1290-96 ई.

- यह खिलजी वंश का संस्थापक एवं प्रथम सुल्तान था।
- इसने अपना राज्याभिषेक कैलूगढ़ी (किलोखरी) में कराया और एक वर्ष तक दिल्ली नहीं आया।

जलालुद्दीन खिलजी के समय की प्रमुख घटनायें

1. मलिक छज्जू का विद्रोह-1290 ई. में कड़ा का सूबेदार (मलिक छज्जू) ने विद्रोह कर दिया सुल्तान ने इसके विद्रोह का दमन कर दिया।
2. रणथम्भौर अभियान-1291 में सुल्तान रणथम्भौर अभियान किया लेकिन किले की सुदृढ़ता को देखकर अपना अभियान वापस ले लिया यहां का शासक हम्मीर देव था।
3. मंगोलों का आक्रमण-1292 में अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में मंगोलों का आक्रमण हुआ जिसमें मंगोल पराजित हुए।
4. सिद्धीमौला को मृत्युदंड-सिद्धिमौला एक सूफी संत थे, सुल्तान की हत्या के षड्यन्त्र रचने की संभावना के कारण मृत्यु दंड दिया गया।
5. देवगिरि अभियान-1296 अलाउद्दीन खिलजी के नेतृत्व में देवगिरि अभियान हुआ। इसने देवगिरि के शासक रामचन्द्रदेव को पराजित कर अपार धन प्राप्त किया।
6. सुल्तान की हत्या-1296 में कड़ा में अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान की हत्या करा दिया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

- अलाउद्दीन खिलजी का बचपन का नाम अली गुरशास्प था।
- अपनी प्रारम्भिक सफलताओं से प्रसन्न होकर यह अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो गया।
- इसने अपने सिक्कों में सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि धारण की।
- दिल्ली के कोतवाल अला-उल-मुल्क के समझाने पर इसने इन योजनाओं का त्याग कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के काल में मंगोल आक्रमण

क्र.	वर्ष	मंगोल नेता	सल्तनत सेना का नेतृत्व
1.	1297 ई.	कादर खां	उलुग खां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
2.	1299 ई.	सल्दी	जफरखां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
3.	1299 ई.	कुतलुग ख्वाजा	जफर खां ने पराजित किया।
4.	1303 ई.	तरगी वेग	सल्तनत सेना ने पराजित किया।
5.	1305 ई.	अलीवेग, तरतक एवं तरगी वेग	मलिक नायक के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया।
6.	1306ई.	कुबक	मलिक काफूर ने पराजित किया।

- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने धर्म को राजनीति से अलग रखा।

विद्रोह

- 1301 ई. में उसके विरुद्ध तीन विद्रोह हुए—
  1. अकत खां का विद्रोह
  2. उमर खां एवं मंगू का विद्रोह
  3. हाजी मौला का विद्रोह
- इन विद्रोहों के निवारण के लिए इसने चार अध्यादेश जारी किये—

4 अध्यादेश

1. एक सशक्त (मजबूत) गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की तथा बरीद तथा मुन्हिया या जासूस नियुक्त किये गये।
2. अमीरों के पारस्परिक मेल जोल और विवाह सम्बन्धों पर रोक।
3. शराब और भांग जैसे मादक पदार्थों के प्रयोग पर रोक।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

4. अनुदान में दी गयी भूमियां इसने वापस ली और राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिनके पास अत्यधिक सम्पत्ति है। उनसे कर के रूप में ले ली जाये।

गुजरात विजय - 1299

- इस समय यहां का शासक कर्ण बघेला था।
- 1299 में गुजरात अभियान हुआ और कर्णबघेला बिना युद्ध किये ही भाग गया और देवगिरी में रामचन्द्र देव के यहां शरण ली। इस तरह गुजरात को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।

रणथम्भौर विजय - 1300-1301 ई.

- इस समय यहां का शासक हम्मीर देव था।
- 1300 ई. में रणथम्भौर अभियान हुआ और हम्मीर देव के मंत्री रणमल के विश्वासघात के कारण 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने किले को जीत लिया।

मेवाड़ विजय 1303 ई.

- इस समय यहां का शासक राणा रतन सेन था।
- 1303 में अलाउद्दीन ने स्वयं मेवाड़ अभियान किया। इस अभियान में अमीर खुसरो भी इसके साथ थे।
- इस अभियान का एक और मुख्य उद्देश्य राणारतन सेन की पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना था।

मालवा विजय- 1305 ई.

- इस समय यहां का शासक महलक देव था।
- 1305 में मालवा अभियान हुआ जिसमें महलक देव पराजित हुआ और मालवा को सल्तनत में मिला लिया गया।

जालौर विजय- 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक कन्नड़ देव था।
- 1311 में जालौर अभियान हुआ। युद्ध में कन्नड़ देव पराजित हुआ और जालौर को सल्तनत में मिला लिया गया।

यह उत्तर भारत की अन्तिम विजय थी।

दक्षिण भारत की विजय

- दक्षिण अभियान का मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारत की सम्पत्ति प्राप्त करना था।

देवगिरि अभियान 1307 ई.

- इस समय देवगिरि का शासक रामचन्द्रदेव था।
- 1307 में मलिक काफूर ने देवगिरी पर आक्रमण किया।
- रामचन्द्रदेव को परिवार सहित दिल्ली भेज दिया गया। रामचन्द्र देव यहां पर 6 महीने तक रहा और अपनी एक पुत्री का विवाह सुल्तान के साथ कर दिया।
- सुल्तान ने इसे 1 लाख स्वर्ण मुद्रा एवं राय-राया की उपाधि प्रदान की।

तेलंगाना अभियान 1309-10 ई.

- इस समय तेलंगाना का शासक प्रताप रूद्र देव द्वितीय था। इसकी राजधानी वारंगल थी।
- युद्ध में पराजित होने के बाद प्रताप रूद्र देव द्वितीय बहुत से उपहार के साथ सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इसी उपहार में विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी सम्मिलित था।

होयसल राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर बल्लाल देव तृतीय था। इसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी।

पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर पांड्य था। इसकी राजधानी मदुरा थी।
- 1311 में मलिक काफूर ने मदुरा पर आक्रमण किया लेकिन वीर पाण्ड्य इसके हाथ नहीं लगा। यहां पर इसने भीषण लूट पाट किया।
- दक्षिण का यही एक राजा था जिसने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार नहीं की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति

- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण नीति क्यों लागू की, इस सन्दर्भ में बर्नी उल्लेख करता है कि बाजार नियंत्रण नीति सेना की सुविधा के लिए लागू की गयी थी।
- बाजार नियंत्रण नीति दो सिद्धांतों पर आधारित थी।

1. उत्पादन लागत के आधार पर वस्तुओं का मूल्य निर्धारण।
2. बाजार में आम जरूरत की वस्तुओं की कमी न हो जाए।

- सुल्तान ने चार प्रकार के बाजार गठित किए-

1. मंडी - यह अनाज का बाजार था। इससे सम्बन्धित 8 जाब्ता (अधिनियम) थे। पहला अधिनियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण था जिसने अन्तर्गत सभी प्रकार के अनाजों का मूल्य निर्धारित था। अनाज बाजार के नियंत्रण करने के लिए सुल्तान ने शहना-ए-मंडी की नियुक्ति की और जमाखोरों को कठोर दण्ड की व्यवस्था की।

2. सराय अदल (न्याय का स्थान)

- इससे सम्बन्धित 5 अधिनियम थे। यह एक तरह से सरकारी सहायता प्राप्त बाजार था।
- इसमें विभिन्न प्रकार के कपड़े, मेवे, जड़ी-बूटियां, घी, चीनी आदि बिकता था।

3. घोड़ों, दासों, एवं मवेशियों का बाजार

- इससे सम्बंधित चार सामान्य नियम थे। पहला नियम किस्म के अनुसार मूल्य निर्धारण था। दूसरा नियम दलालों पर कठोर नियन्त्रण था।

4. सामान्य बाजार

- इस बाजार में आम जरूरत की वस्तुएँ बिकती थी जैसे सब्जी, मिट्टी के बर्तन आदि।
- इनका मूल्य भी उत्पादन मूल्य पर आधारित किया गया था।

मुबारक शाह खिलजी (1316-20)

- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने उसके 6 वर्षीय पुत्र सिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बना दिया और स्वयं उसका प्रति शासक बन गया।
- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के 35 दिन बाद मलिक काफूर की हत्या कर दी गयी। इसके बाद अलाउद्दीन खिलजी के एक अन्य पुत्र मुबारक खां को प्रति शासक नियुक्त किया गया।
- मुबारक खां ने शिहाबुद्दीन उमर को बन्दी बना लिया और हत्या करा दी और स्वयं शासक बन गया।
- इसने अलाउद्दीन खिलजी के समय के सभी कठोर कानून समाप्त कर दिये और खलीफा की प्रभुसत्ता स्वीकार नहीं की और स्वयं को खलीफा घोषित किया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- जलालुद्दीन खिलजी के समय में पराजित मंगोल सैनिक इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। ये नव मुस्लिम कहलाये और दिल्ली में जिस क्षेत्र में बसे उसे मंगोलपुरी के नाम से जाना जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी अपने सिक्कों पर सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि अंकित कराई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रामचन्द्रदेव को राय-राया की उपाधि दी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सैन्य सुधार के अन्तर्गत नकद वेतन देने, घोड़ों को दागने की प्रथा तथा सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा प्रारम्भ की।
- अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय का श्रेय मलिक काफूर को जाता है।
- मुबारकशाह खिलजी दिल्ली का एकमात्र सुल्तान है जिसने खलीफा की उपाधि धारण की।

तुगलक वंश (1320-1414)

- दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला यह राजवंश था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इस वंश का संस्थापक गाजी मलिक (ग्यासुद्दीन तुगलक शाह) था।

ग्यासुद्दीन तुगलक शाह (1320-25)

- कृषि के विकास के लिए इसने नहरों का निर्माण कराया। यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने नहर का निर्माण कराया।
- इसने डाक व्यवस्था को श्रेष्ठ और तीव्रगामी बनाया।
- सुल्तान का अपने समय के प्रसिद्ध सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया से सम्बंध बिगड़ गये। सुल्तान जब बंगाल विजय से वापस आ रहा था तब औलिया के पास सन्देश भेजा कि वह उसके दिल्ली पहुंचने से पहले दिल्ली छोड़ दे। औलिया ने उत्तर दिया था 'हुनूज दिल्ली दूरस्थ'।

मुहम्मद तुगलक (1325-51)

- मुहम्मद तुगलक दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- सुल्तान के योगियों से अच्छे सम्बंध थे। जैन आचार्य जिन प्रभासूरि के साथ इसके अच्छे सम्बंध थे।
- सुल्तान हिन्दुओं के त्यौहार होली में भाग लेता था।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान था जो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के दरगाह के दर्शन के लिए अजमेर तथा सालार मसूद गाजी की दरगाह के दर्शन के लिए बहराइच गया।
- 1340 ई. में इसने सिक्कों पर अपना नाम हटाकर खलीफा मुस्त कफी विल्लाह का नाम अंकित कराया।

राजधानी परिवर्तन

- सुल्तान ने दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) राजधानी बनाने की योजना बनायी।
- इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाकर वहां राजनीतिज्ञ प्रभुत्व स्थापित करना था इसलिए इसने दिल्ली के मुसलमानों को दौलताबाद जाने का आदेश दिया।

प्रतीक मुद्रा का प्रचलन (सांकेतिक मुद्रा)

- दिल्ली सल्तनत में दो मुद्राएं प्रचलित थीं—

1. चांदी का टंका
2. तांबे का जीतल

- सुल्तान ने प्रतीक मुद्रा के रूप में कांसे की मुद्रा प्रचलित की जिसका नाम अदली था। यह चांदी के टंके के मूल्य के बराबर थी।

उद्देश्य

- चौदहवीं शताब्दी में पूरे विश्व में चांदी की कमी हो गयी। यहां की मुख्य मुद्रा चांदी कीं टंका थी।
- चांदी की कमी के कारण मुद्रा की कमी हो गयी जिससे वस्तुओं के मूल्य में कमी हो गयी। अतः सुल्तान ने अपनी आर्थिक शाख बचाने के लिए प्रतीक मुद्रा का प्रचलन किया।
- दुर्भाग्य से इसने मुद्रा निर्माण विधि को गुप्त नहीं रखा और न ही नकली सिक्का बनाने वालों के लिए दण्ड का विधान किया। परिणामस्वरूप घर-घर नकली सिक्का बनने लगे और पूरा बाजार नकली सिक्कों से भर गया।
- इससे पूरा राष्ट्रीय व्यापार ठप हो गया।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि योजना असफल हो गयी तब आदेश दिया कि जिन लोगों के पास प्रतीक मुद्रा है उन्हें जमा करके बदले में चांदी के सिक्के ले जाए।

खुराशान अभियान योजना

- इस समय ईरान में मंगोलों का शासन था जिन्हें इलखान कहा जाता था।
- इस मसय इल्खानों की शक्ति का पतन हो गया था जिसके कारण राजनीतिक अस्थिरता थी।
- इसी राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाने के लिए सुल्तान ने खुराशान अभियान की योजना बनायी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इसके लिए सुल्तान ने मिस्र के शासक से सन्धि की अभियान के लिए 3 लाख 70 हजार सेना तैयार की और सेना को 1 वर्ष का अग्रिम वेतन दिया।
- दुर्भाग्य से मिस्र के शासक से जो सन्धि की थी वह क्रियान्वित नहीं हो पायी क्योंकि मिश्र के शासक को अपदस्थ कर दिया गया और यह योजना असफल रही।

दोआब में कर वृद्धि योजना

- सुल्तान राजकीय आय को बढ़ाना चाहता था इसलिए करों में वृद्धि की योजना बनायी और इस योजना को सर्वप्रथम दोआब क्षेत्र में लागू किया।
- दुर्भाग्य से जब यह योजना लागू हुई तब दोआब क्षेत्र में अकाल पड़ गया।
- किसान राहत की अपेक्षा कर रहे थे और इसी समय यह योजना लागू हो गयी परिणामस्वरूप किसानों ने विद्रोह कर दिया। यह किसानों का पहला विद्रोह था।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि यह योजना असफल हो गयी तब उसने किसानों को कृषि ऋण प्रदान किया जिसे सोनधरी के नाम से जाना जाता है।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने प्राकृतिक आपदा के समय किसानों को ऋण दिया।
- बदायूंनी उल्लेख करता है कि इस तरह सुल्तान को अपनी रियाया से और रियाया को अपने सुल्तान से मुक्ति मिली।

मुहम्मद तुगलक की प्रशासनिक योजनाओं का क्रम

1. दोआब में कर वृद्धि योजना
2. राजधानी परिवर्तन की योजना
3. प्रतीक मुद्रा की योजना
4. खुराशान अभियान की योजना
5. कराचिल अभियान की योजना
6. कृषि उत्पादन वृद्धि की योजना

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)

- मुहम्मद तुगलक के न कोई पुत्र था और न ही अपना कोई उत्तराधिकारी।
- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम नैला देवी था।
- इसने तेलंगाना के एक ब्राह्मण जो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था मलिक मकबूल को अपना वजीर नियुक्त किया और इसे खान-ए-जहां की उपाधि प्रदान की।
- फिरोज तुगलक अपने प्रशासनिक और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रसिद्ध था।
- कुछ इतिहासकारों ने इसे सल्तनत काल का अकबर कहा।

प्रशासनिक एवं लोक कल्याणकारी कार्य

1. ऋणों की समाप्ति

मुहम्मद तुगलक द्वारा किसानों को दिए गये ऋण को इसने माफ कर दिया और ऋण पंजिकाओं को नष्ट करा दिया।

2. राजनीतिक अपराधों के दण्ड विधान में परिवर्तन

इसने राजनीतिक अपराध जैसे राजद्रोह गबन के दण्ड विधान में परिवर्तन करके कठोर दण्ड की जगह सामान्य दण्ड देने की व्यवस्था की।

3. सरकारी सेवाओं को वंशानुगत बनाया

फिरोज तुगलक ने आदेश दिया कि सरकारी सेवक के वृद्ध होने या मृत्यु होने पर उसके पुत्र अथवा दामाद अथवा दास को सरकारी सेवा में नियुक्त किया जाय।

4. बुद्धिजीवियों को राहत

इसने धार्मिक एवं शैक्षिणिक कार्यों से जुड़े मुस्लिम व्यक्तियों को कर मुक्त भूमि अनुदान दिया। उल्लेमाओं (धार्मिक वर्ग) ने इसे दिल्ली का आदर्श सुल्तान घोषित किया।

5. नकद वेतन की जगह जागीर देने की व्यवस्था

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

6. राजस्व व्यवस्था में सुधार

- फिरोज तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने राज्य का हासिल तैयार कराया। इसके लिए इसने ख्वाजा हुसामुद्दीन को नियुक्त किया। इन्होंने 6 वर्ष कार्य करके राज्य का हासिल तैयार किया। इनके अनुसार राज्य की वार्षिक आय 6 करोड़ 75 लाख टंका थी।
- फिरोज तुगलक ने 24 ऐसे करों को समाप्त किया जिन्हें सरियत मान्यता नहीं देता। उसने दिल्ली के ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया।

7. मुद्रा में सुधार

फिरोज तुगलक ने 3 प्रकार की मुद्राओं का प्रचलन किया।

1. शंशगनी- यह चांदी की मुद्रा थी यह टंका के मूल्य के 1/6 थी।
2. अध - यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/2 थी।
3. विख- यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/4 थी।

8. नहरों का निर्माण

सुल्तान ने अनेक नहरों का निर्माण कराया। यह नहरें दिल्ली एवं हरियाणा के मध्य केन्द्रित थी। जो किसान इन नहरों से सिंचाई करते थे उनसे (हर्ब-ए-सर्व) सिंचाई कर लिया जाता था जो उपज का 1/10 होता था।

9. दासों से प्रेम

यह सर्वाधिक दास प्रेमी सुल्तान था। इसके पास एक लाख 80 हजार दास थे। इसने दासों को नियंत्रित करने के लिए दीवान-ए-बँदगान अर्थात् दासों का विभाग स्थापित किया। प्रत्येक दास को 10 से 100 टंका वार्षिक वेतन दिया जाता था।

10.शिफाखाना की व्यवस्था- (निःशुल्क चिकित्सालय)

सुल्तान ने अनेकों निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना करायी।

11. रोजगार दफ्तर की स्थापना

दिल्ली के कोतवाल के माध्यम से इसने बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था की।

12. निकाह दफ्तर की स्थापना

इस दफ्तर से गरीब मुसलमानों की कन्याओं के विवाह के लिए आवश्यकता अनुसार 50, 30, 25 टंका धन दिया जाता था।

13. कारखानों का निर्माण

सुल्तान ने दो प्रकार के कारखाने का निर्माण कराया।

1. रातिबी कारखाना - इसमें मनुष्यों तथा पशुओं के लिए भोजन तैयार किया जाता था।
2. गैर रातिबी कारखाना - इसमें सुल्तान व उसके परिवार के लोगों एवं अमीरों के दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं तैयार की जाती थीं।

14. उद्यानों से प्रेम

सुल्तान को उद्यानों से बहुत प्यार था। इसने केवल दिल्ली के आसपास फलों के 1200 बाग लगवाये।

- फिरोज तुगलक इस्लाम धर्म के प्रति अत्यधिक कट्टर था। इसने स्त्रियों को सन्तों के मकबरों पर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

फिरोज तुगलक के उत्तराधिकारी

- फिरोज के दो पुत्र थे फतेह खां और मुहम्मद शाह।
- इनमें फतेह खां की मृत्यु फिरोज तुगलक के जीवन काल में हो गयी और मुहम्मद शाह को फिरोजी दासों ने राजधानी से भगा दिया। इस कारण फतेह खां का पुत्र तुगलकशाह द्वितीय उत्तराधिकारी बना जो 1388-89 तक शासन किया।
- 1389 में इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई अबूबक्रशाह दिल्ली का सुल्तान बना।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इसके बाद मुहम्मद शाह 1390 से 1394 तक शासन किया।
- इसके शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना 1398 में तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण है।
- तैमूर के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्त करना था।

सैयद वंश (1414 - 1451)

खिज्र खां (1414-21)

- यह सैयद वंश का संस्थापक था। तैमूर ने खिज्र खां को पंजाब और मुल्तान का सूबेदार नियुक्त किया।
- इसने दौलत खां को पराजित करके दिल्ली का स्वतंत्र शासक बना।
- खिज्र खां स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद साहब का वंशज मानता था।
- खिज्र खां दिल्ली का स्वतंत्र शासक था। लेकिन यह स्वयं को तैमूरियों का राज्यपाल मानता था।
- इसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की और न ही अपने नाम का सिक्का जारी किया।
- इसने रैयत-ए-आला की उपाधि के साथ शासन किया।

मुबारकशाह (1421-34)

- इसने विदेशी प्रभुसत्ता को नकार दिया और सुल्तान की उपाधि ग्रहण की। इसने मालवा के शासक हुसंगशाह और जौनपुर के शासक इब्राहिमशाह शर्की से अपने दुर्बल राज्य की रक्षा की।
- दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो पिता के जीवनकाल में सुल्तान बना।

मुहम्मद शाह (1434-43)

- इसके समय में 1440 ई. में मालवा के शासक महमूद शाह खिलजी ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तीन दिनों के भीषण युद्ध के बाद दोनों में संधि हो गयी और महमूद शाह खिलजी वापस मालवा चला गया।

अलाउद्दीन आलम शाह (1443-1451)

- यह सैयद वंश का अन्तिम और सर्वाधिक अयोग्य शासक था।
- इसका अपने वजीर हमीद खां से झगड़ा हो गया और नाराज होकर यह बदायूं चला गया।

लोदी वंश (1451-1526)

- लोदी वंश के शासक अफगान थे। यह अफगानों की साहूखेल शाखा से सम्बंधित थे।

बहलोल लोदी (1451-89)

- यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक समय तक शासन किया।
- इसने अफगान अमीरों के साथ समानता का व्यवहार किया।
- यह कभी ऊंचे सिंहासन पर नहीं बैठा बल्कि यह कालीन पर बैठता था और इसके चारों तरफ इसके अमीर बैठते थे।
- इसने बहलोली नामक चांदी की मुद्रा प्रचलित की जो टंका के मूल्य का 1/3 थी। यह अकबर के समय तक विनिमय का माध्यम बनी रही।
- बहलोल लोदी जौनपुर के शासक हुसैनशाह शर्की को पराजित कर जौनपुर दिल्ली में मिला लिया।

सिकन्दर लोदी (1489-1517)

- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम जैबन्द था।
- 1504 में इसने आगरा नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने गज-ए-सिकन्दरी नामक एक प्रामाणिक नाप की इकाई का प्रचलन किया।
- इसने गरीबों और असहायकों को भत्ते देने की व्यवस्था की और जब यह अपने कपड़े और बिस्तर बदलता था तो उसे बेच देता था और उससे अनाथ कन्याओं का विवाह करता था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- यह एक कवि था। यह फारसी भाषा में गुलरूखी उपनाम से कविताएं लिखता था।

इब्राहिम लोदी (1517-26)

- यह दिल्ली सल्तनत तथा लोदी वंश का अन्तिम शासक था।
- गद्दी पर बैठते ही इसने ग्वालियर अभियान किया और यहां के शासक विक्रमजीत को पराजित करके इसे अपने अधीन कर लिया।
- इस विजय से उत्साहित होकर इसने मेवाड़ अभियान किया लेकिन यहां के शासक राणासांगा से यह पराजित हुआ।
- 1525 में बाबर पंजाब को जीतकर आगे बढ़ा और 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के मैदान में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध का परिणाम यह रहा कि भारत में लोदी वंश के शासन का अन्त हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुयी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो युद्ध भूमि में लड़ता हुआ मारा गया।

सल्तनतकालीन प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजधानी होती थी।
- ऐबक के समय में लाहौर, इल्तुमिश से लेकर बहलोल लोदी के समय तक दिल्ली और सिकन्दर लोदी तथा इब्राहिम लोदी के समय में राजधानी आगरा थी।

सुल्तान

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु सुल्तान होता था।
- इसके पद को दैवी प्रकृति का घोषित किया गया।

सुल्तान के पदाधिकारी

नाइब-ए-मुमालिकात- सुल्तान के बाद यह राज्य का प्रमुख पदाधिकारी था। इस पद का सृजन बहरामशाह के काल में हुआ जब उसने ऐतगिन को नियुक्त किया।

- इसके कार्य सुल्तान की अनुपस्थिति में सुल्तान के सभी कार्यों को सम्पन्न करना था। इस पद का महत्व सुल्तान विशेष की स्थिति पर निर्भर करता था।

वजीर-इसके कार्यालय को दिवाने-ए-विजारत के नाम से जाना जाता था।

- तुगलक काल विजारत की संस्था का चरमोत्कर्ष काल था। इस काल में वजीरों को न केवल अत्यधिक प्रतिष्ठा मिली बल्कि अत्यधिक वेतन भी दिया जाता था।
- कार्यालय में दो वरिष्ठ अधिकारी होते थे -
  1. मुशरिफ-महालेखाकार
  2. मुस्तौफी - महालेखा परीक्षक

दीवान-ए-आरिज (सैन्य विभाग)- इस विभाग के प्रमुख अधिकारी को आरिज-ए-मुमालिक के नाम से जाना जाता था। इस विभाग की स्थापना बलबन ने की थी। इसका मुख्य कार्य सेना की भर्ती करना था। सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और उन्हें सुसज्जित करना भी इसका कार्य था।

- यह सेना का सेनापति नहीं होता था।

दीवान-ए-इंशा (आलेख विभाग)-इस विभाग का प्रमुख अधिकारी दबीर-ए-खास या अमीर मुंशी होता था। इसका मुख्य कार्य शाही फरमानों को लिपिबद्ध करना और उन्हें सम्बद्ध विभागों तक पहुंचाना था।

दीवान-ए-रसालत-इसका प्रमुख अधिकारी रसालत-ए-मुमालिक होता था जो विदेश मंत्री की हैसियत से कार्य करता था।

सद्र-उस-सुदूर-यह धार्मिक मामलों में सुल्तान का मुख्य सलाहकार था। यह सुल्तान की तरफ से धार्मिक संस्थाओं

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

शैक्षणिक संस्थाओं और व्यक्तियों को अनुदान देता था।

अमीर-ए-हाजिब-इसे अमीर बारबक भी कहा जाता था। यह दरबारी मामलों की देखभाल करनेवाला प्रमुख अधिकारी था।

दीवान-ए-वकूफ-जलालुद्दीन खिलजी ने खर्चे के ब्योरे को तैयार करने के लिए इसकी स्थापना की।

दीवान-ए-अमीर कोही-मुहम्मद तुगलक ने सर्वप्रथम इस विभाग की स्थापना की। इसका मुख्य कार्य मालगुजारी व्यवस्था की देखभाल एवं भूमि को खेती के योग्य बनाना होता था।

दीवान-ए-खैरात-यह दान विभाग था। इसकी स्थापना भी फिरोज तुगलक ने की।

न्याय व्यवस्था

- सल्तनत का सर्वोच्च न्यायाधीश स्वयं सुल्तान होता था।
- सुल्तान के न्यायालय को दीवान-ए-मजालिम के नाम से जाना जाता था।

इस्लामी कानून के स्त्रोत

1. **कुरान** - दैवी रहस्यों का उद्घाटन है।
2. **हदीस** - कानून एवं धर्म के सम्बन्ध में पैगम्बर साहब की मान्यतायें एवं निर्देश हैं।
3. **इजमा** - प्रथम दो श्रोतों के आधार पर मुस्लिम न्यायविदों द्वारा दिये गये निर्णय।
4. **कयास** - तर्क एवं विश्लेषण के आधार पर कानून की व्याख्या का तरीका

भू -राजस्व व्यवस्था

- तुर्की साम्राज्य की स्थापना के बाद प्राचीन कर व्यवस्था को समाप्त नहीं किया गया बल्कि पुराने शासक वर्ग को बनाये रखा गया था।
- प्रारम्भिक वर्षों में इन शासकों से वसूल किये गये कर ही राजकीय आय का मुख्य श्रोत था।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था। जिसने भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने हिन्दू जमींदारों के अधिकारों को समाप्त किया और उन्हें भी कर देने के लिए बाध्य किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने पुनः भू राजस्व की दर 1/3 कर दिया एवं जमींदारों के कुछ अधिकारों को वापस किया।

भू-राजस्व निर्धारण की पद्धतियां

1. **बंटाई पद्धति-**इसके अन्तर्गत 3 प्रकार से बंटाई की जाती थी—
   (i) खेत बंटाई- खेत में खड़ी फसल का बँटवारा।
   (ii) लंक बंटाई- कटी हुई फसल का बंटवारा
   (iii) रास बंटाई - अनाज का बंटवारा
2. **मसाहत पद्धति-**इसका प्रचलन अलाउद्दीन खिलजी ने किया था। इसके अन्तर्गत कृषि योग्य भूमि की पैमाइश की गई और प्रति बिस्वा उपज का निर्धारण करके उपज का 1/2 भाग लेना।
3. **मुक्ताई पद्धति -** सुल्तान द्वारा जमींदारों पर कर निर्धारित कर देना। इसके बाद जमींदार किसानों पर कर निर्धारित करते थे।
   - सल्तनत काल में सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति बंटाई पद्धति थी।

सल्तनतकालीन प्रमुख कर

1. **खराज/खिराज-** यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर था। यह सामान्यतः उपज का 1/3 भाग लिया जाता था लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने 1/2 भाग वसूल किया।
2. **उश्र-** यह मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर जो 1/5 से 1/10 के बीच में लिया जाता था।
3. **खुम्स-**सैन्य अभियानों के समय लूटे गये धन में राज्य का हिस्सा था। शरियत के अनुसार 1/5 राज्य

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

का तथा 4/5 सैनिकों का होता था। लेकिन अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद तुगलक ने 4/5 स्वयं लिया तथा 1/5 सैनिकों को दिया।

4. **जजिया**-यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला व्यक्ति कर था इसे मुंडकर भी कहा जाता था। स्त्री, बच्चे वृद्ध अपंग ब्राह्मण जजिया कर से मुक्त होते थे। जो जजिया देता था। उसे जिम्मी कहा जाता था। भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध के हिन्दुओं से जजिया वसूल किया था।

5. **जकात**-यह मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था। यह धनी मुसलमानों की आय का 21/2 (ढाई) प्रतिशत होता था।

6. **हर्ब-ए-शर्ब**-यह सिंचाई कर था जो उपज का 1/10 होता था।

7. **चरी**-चारागाह कर था।

8. **घर** - गृहकर था इन दोनों करो को अलाउद्दीन खिलजी ने वसूल किये थे।

9. **तरकात**-यह लावारिश सम्पत्ति की जब्ती से होने वाली आय थी।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- तुर्क आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण से पहले पश्चिम एवं मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण-पश्चिम यूरोप की कला शैलियों की विशेषताओं को मिलाकर अपनी एक विशिष्ट स्थापत्य कला शैली का विकास कर लिया था।
- इस्लाम में जीव-जन्तुओं के चित्र बनाने एवं मूर्तियां बनाने पर प्रतिबन्ध था। इनकी जगह फूल-पत्तियां ज्यामितीय चित्र एवं कुरान की आयतों को पत्थरों पर खोदते थे और इस पर नक्काशी की जाती थी। अलंकरण की इस संयुक्त विधि को अरबस्क विधि का नाम दिया गया है।
- चित्तौड़ का 'कीर्ति स्तंभ' राणा कुंभा के शासनकाल में निर्मित हुआ था। इस कीर्ति स्तंभ को राणा कुंभा की उपलब्धियों का स्मारक माना जाता है। इस स्तंभ का निर्माण राणा कुंभा ने महमूद खिलजी पर विजय प्राप्त कर उसकी स्मृति में कराया था। राणा कुंभा विद्वान के साथ-साथ महान संगीतकार एवं कुशल वीणावादक था।
- भारत का प्रथम मकबरा जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित हुआ वह था बलबन का मकबरा। बलबन ने मेहरौली क्षेत्र में स्वयं के मकबरे का निर्माण लाल पत्थर से कराया था। इसमें तीन कक्ष बनाए गये थे जिसमें बीच के कक्ष में बलबन की कब्र एवं शेष कक्ष में उसके परिवार के लोगों की कब्र है।

प्रमुख इमारतें

इमारत का नाम	स्थान	निर्माता का नाम	विशेषता
1. कुब्बवत-उल इस्लाम मस्जिद	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक	इसका निर्माण 27 हिन्दू एवं जैन मन्दिरों की सामग्री से किया गया था। यह दिल्ली की पहली इस्लामी इमारत है।
2. अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद	अजमेर	कुतुबुद्दीन ऐबक	एक संस्कृत विद्यालय को तोड़वाकर इसका निर्माण कराया गया।
3. कुतुबमीनार	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक	प्रथम मंजिल का निर्माण ऐबक ने कराया था।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

			पूरा इल्तुतमिश एवं इल्तुतमिश ने कराया। इसका नाम सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर है। - मूल रूप में 4 मंजिला लाल पत्थर की है। - फिरोज तुगलक के समय में बिजली गिरने से चौथी मंजिल ध्वस्त हो गई तब फिरोज तुगलक संगमरमर से चौथी एवं पांचवी मंजिल का निर्माण कराया।
4. सीरी का किला	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी	मंगोलों से दिल्ली की रक्षा हेतु इस मजबूत किले का निर्माण कराया।
5. अलाई दरवाजा	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी	सल्तनत काल की पहली इमारत जिसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ है।
6. जमायत-ए-खाना मस्जिद	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी के समय में खिज्र खां द्वारा	सल्तनत काल की पहली इमारत जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित है।
7. छप्पन कोट्ट	दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक	यह गयासुद्दीन तुगलक का महल था। यह सुनहरी ईंट से बना था।
8. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा	दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक	यह मकबरा झील के मध्य निर्मित किया गया था।
9. सिकन्दर लोदी का मकबरा	दिल्ली	सिकन्दर लोदी	भारत का पहला मकबरा है जिसमें दोहरे गुम्बद का निर्माण किया गया है।
10. मोठ की मस्जिद	दिल्ली	सिकन्दर लोदी के वजीर मिंया भूआ ने बनवाया	सामने की दीवार में पांच मेहराबदार द्वार हैं।

सल्तनतकालीन साहित्य

- अमीर खुसरो को 'हिन्दी खड़ी बोली' का जनक माना जाता है। ये एक नई काव्य शैली 'सबक-ए-हिन्दी' अर्थात् हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता थे। इन्हीं को हिन्दवी का भी जनक माना जाता है।
- अमीर खुसरो का जन्म पटियाली नामक स्थान में हुआ था। पहले यह स्थान एटा जिले में था। वर्तमान में यह कासगंज में स्थित है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

सल्तनत कालीन साहित्य		
ग्रंथ का नाम	**लेखक का नाम**	**विशेषता**
1. तारीख-ए-हिन्द (अरबी में)	अलबरूनी (अबू रैहान)	11वीं शताब्दी के भारत के सामाजिक धार्मिक जीवन का वर्णन
2. ताज-उल-मासीर	हसन निजामी	प्रथम ऐसा ग्रंथ जो भारत में मुस्लिम शासन के प्रारम्भ का वर्णन करता है।
3. तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज-उस-सिराज	इसमें 1259 ई. तक का इतिहास संकलित है।
4. मिफ्ताह-उल-फुतूह	अमीर खुशरो ने बलबन से लेकर	जलालुद्दीन खिलजी के समय का विवरण है।
5. खजाइन-उल-फुतूह	गयासुद्दीन तुगलक तक 7 सुल्तानों के दरबार की शोभा बढ़ाई। इन्हें	अलाउद्दीन खिलजी के विजयों का वर्णन है।
6. देवलरानी खिज्रखानी	तूती-ए-हिन्द भी कहा जाता था।	खिज्र खां एवं देवलरानी की प्रेम कथा का वर्णन है।
7. तुगलक नामा	,, ,,	गयासुद्दीन तुगलक के समय का वर्णन है।
8. तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बर्नी यह सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार थे।	फिरोज तुगलक को समर्पित है इसमें 1259 से लेकर फिरोज तुगलक के शासन तक का इतिहास है।
9. फतवा-ए-जहांदारी	जियाउद्दीन बर्नी	तारीख-ए-फिरोजशाही का पूरक ग्रंथ है।
10. तारीख-ए-फिरोजशाही	शम्स-ए-सिराज अफीफ	फिरोज के शासनकाल को समर्पित है।
11. फुतूह-उस-सलातीन	इसामी यह बहमनी सुल्तान बहमनशाह के दरबार में रहता था	महमूद गजनवी से लेकर मुहम्मद तुगलक तक का विवरण है इसमें मुहम्मद तुगलक की अत्यधिक आलोचना है।
12. किताब-उर-रेहला (अरबी में)	इब्नबतूता यह मुहम्मद तुगलक के शासन काल में मोरक्को से दिल्ली आया। मुहम्मद तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी भी नियुक्त किया था।	इस ग्रंथ का एक भाग दिल्ली सल्तनत को समर्पित है।
13. फुतुहात-ए-फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक	यह फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

दिल्ली सल्तनत : विविध

- 'दस्तार बन्दान' (पगड़ी धारण करने वाले) सल्तनतकाल में उलेमा वर्ग जो उच्च धार्मिक एवं न्यायिक पदों पर आसीन थे, को कहा जाता था। वस्तुतः ये लोग आधिकारिक रूप में सिर पर पगड़ी पहनते थे।
- तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में भारतीय कृषक गेहूं, धान, जौ, चना, मटर, सरसों, तिल, कपास, गन्ना आदि की खेती करते थे लेकिन मक्का की खेती नहीं करते थे। इब्नबतूता ने भी अपने ग्रंथ 'रेहला' में उल्लेख किया है कि भारतीय किसान वर्ष में तीन फसल उगाते थे। यहां गेहूं, धान, गन्ना एवं कपास की खेती बड़े पैमाने पर होती थी।
- जौहर प्रथा की शुरुआत राजपूतों के समय में हुई थी। वस्तुतः राजपूतों ने मुस्लिमों आक्रमणकारियों से स्त्रियों के सम्मान की रक्षा हेतु यह प्रथा प्रारम्भ की थी। जब राजपूत राजा युद्ध में पराजित हो जाते थे तो राजपूत महिलाएं सम्मिलित रूप से अग्नि की चिता जलाकर उसमें जल जाती थीं। इसी प्रथा को जौहर प्रथा कहते थे। सती प्रथा एवं बाल विवाह की प्रथा पहले से चली आ रही थी।
- भारत में 'पोलो' खेल का प्रचलन तुर्कों ने किया था। गुलाम वंश के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक लाहौर में 'पोलो' का खेल खेलते समय घोड़े से गिर गया और अंततः उसकी मृत्यु हो गयी थी।

क्षेत्रीय राज्य

विजयनगर साम्राज्य (1336-1678 ई.)

- मध्यकाल में स्थापित होने वाला प्रथम हिन्दू राज्य विजयनगर साम्राज्य था।
- इसकी स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने 1336 ई. में माधव विद्यारण्य नामक विद्वान ब्राह्मण की प्रेरणा से किया था।
- हरिहर एवं बुक्का द्वारा प्रारम्भ में स्थापित हम्पी (हस्तिनावति) नामक राज्य ही कालांतर में विजयनगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- विजयनगर साम्राज्य 342 वर्षों तक रहा इस बीच में कुल चार राजवंशों ने शासन किया—

  1. संगम वंश 2. सालुव वंश 3. तुलुव वंश 4. अरबिंदु वंश

संगम वंश (1336-1486 ई.)

- संगम वंश की स्थापना हरिहर बुक्का ने की।

हरिहर प्रथम

- संगम वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम था। इसने आनेगोन्दी को अपनी राजधानी बनाई।
- हरिहर प्रथम ने अपने शासन के 17 वर्ष बाद विजयनगर को अपनी राजधानी बनाई। फिर इसी नगर के नाम पर विजयनगर साम्राज्य का नाम पड़ा।

बुक्का प्रथम

- हरिहर प्रथम के बाद बुक्का प्रथम शासक बना। इसने मदुरा को जीतकर अपने राज्य में मिलाया।
- इसने वैदिक धर्म को प्रोत्साहन दिया। इस उपलक्ष्य में 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।

हरिहर द्वितीय

- हरिहर द्वितीय, बुक्का प्रथम का पुत्र था। यह विजयनगर का प्रथम शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।

देवदाय प्रथम

- इसके समय में इटली का एक यात्री निकोलीकोंटी ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

देवराय द्वितीय

- देवराय द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था, जो जनसाधारण में 'इंद्र का अवतार' माना जाता था।
- इसके समय में फारस के शासक शाहरूख ने अब्दुल रज्जाक को अपना दूत बनाकर 1442 ई. में इसके दरबार में भेजा था।
- देवराय द्वितीय ने बड़ी संख्या में अपनी सेना में मुसलमानों को भर्ती किया और उनके उपयोग के लिए एक मस्जिद का निर्माण कराया।

विरुपाक्षराय

- यह संगम वंश का अन्तिम शासक था।

सालुव वंश (1486 - 1505 ई.)

- सालुव वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था।

इम्माडि नरसिंह

- सालुव नरसिंह के दो पुत्र थे। तिम्मा व इम्माडि नरसिंह।
- तिम्मा की हत्या के पश्चात् इम्मडि नरसिंह को गद्दी पर बैठाया गया।
- इम्माडि नरसिंह के वयस्क होने पर उसका अपने संरक्षक नरसा नायक से विवाद हो गया।

तुलुव वंश (1505-1565 ई.)

वीर नरसिंह

- तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह ने की। इसने केवल चार वर्ष तक शासन किया।
- इम्माडि नरसिंह की हत्या कर सिंहासन पर अधिकार करने के कारण उसके विरुद्ध असंतोष फैला गया।

कृष्णदेव राय

- कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान शासक था। इसका शासन काल सफलताओं का युग था।
- इसने बीजापुर राज्य से रायचुर का द्वाबा जीत लिया। इसी तरह इसने उड़ीसा के शासक प्रताप रुद्रदेव गजपति को चार बार पराजित कर आंध्र के तटवर्ती क्षेत्रों को जीत लिया और अन्ततः दोनों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ।
- इसी तरह कृष्णदेवराय ने बीदर पर आक्रमण किया और यहां के शासक महमूदशाह को उसके वजीर बरीदशाह के चंगुल से मुक्त कराकर पुनः गद्दी पर बैठाया। इस उपलक्ष्य में कृष्णदेवराय ने 'यवनराजस्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की।
- कृष्णदेवराय के दरबार में तेलगू के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय स्वयं विद्वान था। इसे आंध्रभोज/दक्षिण का भोज कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय के बाद इसका भतीजा अच्युतराय शासक बना।

सदाशिवराय

- अच्युतराय के बाद कृष्णदेवराय का पुत्र सदाशिवराय शासक बना।
- सदाशिवराय का प्रधानमंत्री रामराय था जो प्रतिशासक के रूप में सारी शक्तियां अपने हाथों में ले लिया।
- अली आदिलशाह ने रामराय से कुछ किलों की मांग की और रामराय ने इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप 23 जनवरी, 1565 ई. में तालीकोटा का युद्ध हुआ। इस युद्ध को बनहट्टी/राक्षसी तंगड़ी का युद्ध/कृष्णा नदी का युद्ध के नाम से जाना जाता है।

आरबिदु वंश (1570-1678 ई.)

- आरबिंदु वंश का संस्थापक तिरुमल था।
- तिरुमल का पौत्र वेंकट द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था।
- वेंकट द्वितीय के शासन काल के समय राजा बोडियार ने मैसूर राज्य की स्थापना की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपनी राजधानी बनाई। इसके समय में विदेशों के अनेक राजनयिक मण्डल यहां आए।
- वेंकट द्वितीय को चित्रकला में अत्यधिक रुचि थी। इसे ईसाई धर्म से सम्बंधित चित्र पसंद थे।

विजयनगर कालीन प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन केन्द्रोमुखी प्रशासन था।
- विजयनगर राज्य का स्वरूप राजतंत्रात्मक था जिसका प्रमुख राजा स्वयं होता था।
- विजयनगर के राजा 'राय' की उपाधि धारण करते थे और स्वयं को ईश्वरतुल्य मानते थे।
- इस काल में राजा की सहायता के लिए दो परिषदें होती थी—

1. **राज्य परिषदें**-इसका स्वरूप बहुत व्यापक होता था। राजा इसी की सलाह पर नीतियों को बनाता था। इसकी स्थिति औपचारिक अधिक होती थी।
2. **मंत्रिपरिषद**-इसका स्वरूप छोटा होता था जिसमें कुल 20 सदस्य होते थे। इसमें प्रधानमंत्री, उपमंत्री और विभागों के सदस्य होते थे। इसमें विद्वान राजनीति में निपुण 50-70 वर्ष आयु वाले निपुण व्यक्ति को इसका सदस्य बनाया जाता था। इसका अध्यक्ष प्रधानी व महाप्रधानी (प्रधानमंत्री) होता था। राजा व युवराज के बाद इसका स्थान था।

भूराजस्व व्यवस्था

- विजयनगर साम्राज्य में राजकीय आय का मुख्य स्रोत भूराजस्व था जिसे 'शिष्ट' कहा जाता था।
- भूराजस्व भूमि की उपज के आधार पर निर्धारित किया जाता था जो सामान्यतः 1/3-1/4 के बीच था।
- 16वीं शताब्दी के मध्य में सदाशिवराय के काल में नाइयों को व्यवसायिक कर से मुक्त कर दिया गया था।

न्याय व्यवस्था

- विजयनगर के शासकों ने चार प्रकार के न्यायालयों का गठन किया था—

1. **प्रतिष्ठिता न्यायालय**-यह न्यायालय ग्राम एवं नगर में स्थापित होते थे जो प्राचीन सभा के रूप में थे।
2. **चल न्यायालय**-यह न्यायालय समय-समय पर अलग अलग स्थानों पर कुछ समय के लिए स्थापित किए जाते थे।
3. **मुद्रिता न्यायालय**-यह केन्द्रीय न्यायालय था जो विभिन्न नगरों में स्थापित किए जाते थे जिसमें उच्च न्यायाधीश नियुक्त किए जाते थे।
4. **शास्त्रिता न्यायालय**-यह राजा का न्यायालय होता था। जो राज्य का सर्वोच्च न्यायालय होता था।

नायंकार व्यवस्था

- इस काल में भूसामंतों एवं सेनानायकों के वेतन के बदले राजा द्वारा उन्हें एक विशेष भूखण्ड प्रदान किया जाता था जिसे अमरम् कहा जाता था।
- अमरम् भूमि का उपयोग करने के कारण इन नायकों को अमरनायक कहा जाता है। ये नायक/अमरनायक स्वतंत्र रूप से अमरम् का उपभोग नहीं करते थे। इसके लिए उन्हें दो दायित्वों का पालन करना पड़ता था—
  1. इस भूमि से प्राप्त आय का एक अंश राजा के खजाने में जमा करना था।
  2. इस भूमि में से प्राप्त आय में से राजा की सहायता के लिए एक सेना का निर्माण करना था।
- दायित्वों का निर्वहन न कर पाने पर उसको दी गयी भूमि वापस ले ली जाती थी। ये नायक आंतरिक मामले में काफी स्वतंत्र होते थे। इनके स्थानांतरण का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- कमजोर शासकों के समय में ये नायक अत्यधिक उच्छृंखल हो जाते थे। इनको नियंत्रण रखने के लिए महामंडलेश्वर की नियुक्त की जाती थी।
- नायंकार व्यवस्था इक्ता प्रथा से मिलती जुलती है।

आयगार व्यवस्था

- विजयनगर के शासकों ने स्थानीय प्रशासन की देखभाल के लिए आयगार व्यवस्था प्रारम्भ की।
- इसके अंतर्गत गांव को संगठित कर एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में विकसित किया गया और प्रत्येक प्रशासनिक इकाई की देखभाल के लिए 12 अधिकारियों को नियुक्त किया गया। इसी शासकीय समूह को आयगार कहा गया।
- आयगारों के पद वंशानुगत होते थे। इन्हें वेतन के बदले में करमुक्त भूमि दी जाती थी जिसे मान्यम् कहा जाता था।
- आयगारों का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना था।

विजयनगर कालीन संस्कृति

- विजयनगर के शासक न केवल साम्राज्य निर्माता थे बल्कि समाज, शिक्षा, साहित्य और कला को भी प्रोत्साहन दिया।

सामाजिक व्यवस्था

- विजयनगर कालीन सामाजिक व्यवस्था में चातुर्वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। समाज में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ कहे जाते थे। इन्हें अत्यधिक सम्मान व श्रद्धा अर्पित की जाती थी।
- दूसरा वर्ण क्षत्रिय था जिसका विशेष उल्लेख नहीं मिलता है।
- तीसरा वर्ण वैश्य था जिसमें व्यापारी व शिल्पी आते थे। वैश्य वर्ग में एक महत्वपूर्ण वर्ग चेट्टी/सेट्ठी था। जिनका व्यापार अधिकांश था। ये बहुत धनी लोग थे।
- शिल्पियों में वीर पांचाल का अधिकांश व्यवसाय इनके अंतर्गत था। इनके अंतर्गत लोहार, कांस्यकार, स्वर्णकार, मूर्तिकार और बढ़ई थे।
- चौथा वर्ण शूद्र था जो कृषि मजदूरी एवं छोटे-मोटे व्यवसाय से जुड़े होते थे।
- इस काल में उत्तर भारत के बहुत से लोग दक्षिण भारत में जाकर बस गए थे जिन्हें 'बड़वा' कहा जाता था।
- इस काल में दास प्रथा का भी प्रचलन था। स्त्री व पुरुष दोनों दासों का उल्लेख मिलता है।
- इस काल में सती प्रथा का प्रचलन भी था। सती होने वाली स्त्री के स्मृति में सती स्मारक भी बनाया जाता था। जिसे सतीगल्ल कहा जाता था।
- बुक्का प्रथम की पुत्र वधु गंगा देवी संस्कृत की प्रकाण्ड विद्वान थी जिसने मदुरा विजय नामक ग्रंथ की रचना की। बुक्का प्रथम की पत्नी होनायी भी विद्वान थी।
- इस युग में मोहनांगी नामक महिला हुई जिसने 'मारीचि परिनम' नामक ग्रंथ की रचना की।

शिक्षा एवं साहित्य

- विजय नगर के शासकों ने शिक्षा एवं साहित्य के विकास में रुचि ली। यद्यपि इस काल में नियमित विद्यालय का विकास नहीं हो सका। इस काल में मठ एवं मंदिर शिक्षा के केन्द्र होते थे। राजाओं द्वारा मठों एवं मंदिरों को भूमि अनुदान देकर शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाता था।
- इस काल में माधव विद्यारण्य और उनके छोटे भाई आचार्य सायण संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हुए जिन्होंने वेदों पर भाष्य लिखे।
- उसी तरह संस्कृत में गंगा देवी ने 'मदुरा विजयम्' नामक ग्रंथ की रचना की और कृष्णदेवराय ने 'जाम्बवती कल्याणम्' नामक ग्रंथ की रचना की।
- इस काल में तेलगू भाषा का अत्यधिक विकास हुआ। तेलगू भाषा के प्रसिद्ध विद्वान श्रीनाथ थे जिन्होंने

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

'हरिविलासम्' नामक ग्रन्थ की रचना की। देवराय द्वितीय ने इन्हें 'कवि सार्वभौम' की उपाधि प्रदान की।

- कृष्णदेवराय के समय में तेलगू भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके दरबार में तेलगू के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज के नाम से जाना जाता था। इनमें अल्लसानि पेद्दन प्रमुख थे।
- अल्लासानिपेद्दन को कृष्णदेवराय ने 'आंध्रकविता पितामह की उपाधि प्रदान की थी। पेद्दन ने 'स्वरोचित संभव मनुचरित' नामक ग्रंथ की रचना की।
- कृष्णदेवराय स्वयं तेलगू का प्रकाण्ड विद्वान था जिसने 'आमुक्त माल्यदा' नामक ग्रंथ की रचना की।

विजयनगरकालीन धर्म

- विजयनगर के शासक हिन्दू धर्म के संरक्षक के रूप में जाने जाते हैं। इस काल के प्रारम्भिक शासक शैव धर्म के अनुयायी थे लेकिन आगे चलकर ये वैष्णव धर्म के अनुयायी हो गए। इस काल में वैष्णव एवं शैव दोनों धर्मों का अत्यधिक विकास हुआ।
- विजयनगर के शासक धर्मसहिष्णु शासक थे। इन्होंने अन्य धर्मों को प्रश्रय दिया।

विजयनगरकालीन कला

- विजयनगर के शासकों में कला में अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की। इस काल की कला ब्राह्मणवादी तत्व से प्रभावित है। व्यक्तिगत भवन के रूप में राजमहल/सभाभवन तथा सिंहासन मंच का निर्माण किया गया।
- इस काल के मंदिर विशाल प्रांगण में बनाए जाते थे। मुख्य मंदिर के बगल में अम्मन मंदिर का निर्माण किया जाता था। इसमें मुख्य मंदिर के देवता की पत्नी की मूर्ति स्थापित की जाती थी।
- इस काल के मंदिरों की एक जीवंत रचना कल्याण मण्डप है। ये स्तम्भों पर आधारित विशाल भवन होता था। इसके मध्य में एक यज्ञ/अग्निवेदी का निर्माण किया जाता था। इस भवन में मंदिर के देवता का प्रतीकात्मक रूप से विवाह उत्सव सम्पन्न होता था।

बहमनी राज्य

- बहमनी राज्य की स्थापना मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हसन गंगू नामक एक अमीर ने की थी।
- हसनगंगू अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह के नाम से बहमनी का सुल्तान बना।
- इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाई। इसने स्वयं को एक अर्ध पौराणिक नायक इस्फांदियार के पुत्र बहमन का वंशज बताया। इसने जजिया कर समाप्त किया।

महमूद गंवा

- यह बहमनी के सुल्तान मुहम्मदशाह तृतीय का वजीर था।
- इसने बहमनी राज्य का विस्तार पूर्वी समुद्र तट से लेकर पश्चिमी समुद्र तट तक किया।
- इसने बहमनी राज्य को चार प्रांतों की जगह 8 प्रान्तों में विभक्त किया।

धार्मिक आंदोलन

भक्ति आन्दोलन

- प्राचीन काल से ही हिन्दुओं को विश्वास था कि मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग हैं-कर्म, ज्ञान और भक्ति ।
- ईश्वर के प्रति अत्यधिक प्रेम और श्रद्धा की भावना को भक्ति कहते हैं। इसमें बताया गया है कि ईश्वर मनुष्य के हृदय में निवास करता है इसलिए इसे प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए सभी मानसिक विकारों से मुक्त होना चाहिए।
- भक्ति में गुरु को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है लेकिन गुरु मोक्ष नहीं दिला सकता। मोक्ष के लिए ईश्वर की कृपा चाहिए

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

और ईश्वर कृपा के लिए प्रपत्ति मार्ग का अनुसरण किया जाय, इसका तात्पर्य है ईश्वर के प्रति समर्पण।

भक्ति आंदोलन के कारण

- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन और उसकी लोकप्रियता का प्राथमिक कारण हिन्दू धर्म और समाज की अधोगति थी।
- इसके अतिरिक्त भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना और इस्लाम के आगमन की प्रेरणा का कार्य किया।
- इस्लाम धर्म की एकेश्वरवाद, भाईचारा, समानता जैसे विचारधारा निम्न वर्ग के हिन्दुओं को आकर्षित किया जिससे वह इस्लाम धर्म स्वीकार करने लगे। ऐसी स्थिति में हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार की आवश्यकता थी।

- भक्ति आंदोलन के संतों के उपदेशों को दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. **सकारात्मक उपदेश**-इसमें एक ईश्वर पर विश्वास और उसकी आराधना पर बल दिया। गुरु सेवा पर बल दिया गया। भाईचारे और समानता पर बल दिया।
2. **नकारात्मक उपदेश**-इसमें मूर्तिपूजा, पुरोहित, यज्ञ और अन्य वाह्य आडम्बर का विरोध, छुआछूत का विरोध।

भक्ति आंदोलनों के महत्वपूर्ण संत

दक्षिण भारत के संत

रामानुजाचार्य

- यह भक्ति आंदोलन के प्रथम संत थे जिनका जन्म 1017 ई. में आंध्र प्रदेश में हुआ और 1137 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।
- प्रारम्भ में ये शंकराचार्य के मत के अनुयायी बने और यादव प्रकाश के शिष्य हुए। लेकिन इनसे संतुष्ट नहीं हुए।
- बाद में गोष्ठीपूर्ण के शिष्य बने और यही इनके वास्तविक गुरु बने। गोष्ठीपूर्ण ने इन्हें गुरुमंत्र दिया और इन्होंने वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
- इन्होंने श्री संप्रदाय की स्थापना की और भगवान विष्णु की भक्ति पर बल दिया।
- रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन का प्रचार-प्रसार किया।
- रामानुजाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखा है। (श्रीभाष्य नाम से)
- रामानुजाचार्य को दक्षिण में विष्णु का अवतार माना जाता है।

निम्बार्काचार्य

- यह रामानुजाचार्य के समकालीन थे। इनका जन्म कर्नाटक के वेल्लारी में हुआ था।
- इन्होंने सनक सम्प्रदाय की स्थापना की और विष्णु की आराधना पर बल दिया।

माध्वाचार्य

- ये 13वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण संत थे। इन्होंने विष्णु की आराधना पर बल दिया और ब्रह्म संप्रदाय की स्थापना की।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ और दक्षिण भारत से उत्तर भारत में भक्ति लाने का श्रेय रामानंद को जाता है।

रामानंद

- रामानंद का जन्म प्रयाग में हुआ और इनका कर्म क्षेत्र काशी था।
- इन्होंने बैरागी संप्रदाय की स्थापना की और राम की आराधना पर बल दिया।
- इन्होंने पुरोहितवाद को चुनौती दी। इनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था, इन्होंने सभी धर्मों, सभी जाति 'स्त्री-पुरुष का भेदभाव किए बिना अपना शिष्य बनाया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- रामानंद के अनुसार-जात-पात पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का कोई।
- रामानंद भक्ति आंदोलन के पहले संत थे जिन्होंने स्त्रियों के मोक्ष के द्वार खोले।

कबीरदास

- कबीरदास रामानंद के सबसे प्रिय और प्रसिद्ध शिष्य थे। इन्होंने शेख तकी नामक सूफी संत से भी शिक्षा ग्रहण की।
- कबीर ने हिन्दू व मुस्लिम धर्मों के समाजों की कुरीतियों का विरोध किया और वेद, पुराण व कुरान की निन्दा की।
- ये समाज सुधारक भी थे इन्होंने बाल-विवाह एवं सती प्रथा का विरोध किया।
- कबीर की रचनाएं बीजक नामक ग्रंथ में संकलित है।

संत रैदास

- संत रैदास परमसत्य (निर्गुण ब्रह्म) की उपासना पर बल दिया। इन्होंने अंतर्मन की पवित्रता पर बल दिया।
- रैदास के अनुसार- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

गुरुनानक

- इनका जन्म 1469ई. में पश्चिमी पंजाब के तलवंडी में खत्री परिवार में हुआ। यह गृहस्थ जीवन व्यतीत किए।
- ये दौलतखां के यहां नौकरी भी किए और कालीबेन नदी (पंजाब) के किनारे ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद इनके वाक्य थे- न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान, ईश्वर एक आदिसत्य है। कबीर की भांति इन्होंने सभी वाह्य आडम्बरों का विरोध किया।
- ये बाबर के समकालीन थे और बाबर के सैय्यद पुर के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था।
- गुरु नानक ने नानक पंथ की स्थापना किया जो आगे चलकर सिक्ख संप्रदाय में परिवर्तित हो गया।
- इनके उपदेश सिक्ख धर्म के पांचवे गुरु अर्जुनदेव के ग्रंथ 'आदिग्रंथ' में संकलित किए।

बल्लभाचार्य

- ये तेलंगाना के ब्राह्मण थे जो बनारस आकर बस गए। यहीं वाराणसी में स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण के आदेश पर वृंदावन चले गए।
- बल्लभाचार्य के भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहा जाता है।
- ये भी गृहस्थ जीवन व्यतीत किए जो कभी संन्यास नहीं लिए और जीवन के अंतिम दिनों में 52 वर्ष की आयु में बनारस में जल समाधि ले ली।

विट्ठलनाथ

- ये बल्लभाचार्य के पुत्र थे जो अकबर के समकालीन थे। अकबर ने इन्हें जैतपुर और गोकुल की जागीर प्रदान की।
- इन्होंने कृष्णभक्ति के आठ संतों को मिलाकर अष्टछाप के कवि की स्थापना की।
- विट्ठलनाथ के प्रसिद्ध शिष्य रसखान थे।

सूरदास

- ये बल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनकी भक्ति को पुष्टिमार्ग का जहाज कहा जाता है जो सखा भाव की भक्ति है।
- सूरदास ने 'सूरसागर' नामक ग्रंथ की रचना की।

चैतन्य

- ये पश्चिम बंगाल के ब्राह्मण थे।
- इनकी प्रार्थना विधि को संकीर्तन कहा जाता है। ये विष्णु के आंशिक अवतार माने जाते हैं।

मीराबाई

- मीराबाई भक्ति आंदोलनों की महिला संतों में सबसे प्रसिद्ध संत थीं।
- यह मेड़ता के राजा राणा रतन सिंह की पुत्री थी। इनका विवाह मेवाड़ के शासक राणा सांगा के पुत्र भोज के साथ हुआ जल्दी ही भोज की मृत्यु हो जाने से यह विधवा हो गयी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- मीराबाई के गुरु रैदास थे। जीवन के अंतिम वर्षों में यह द्वारिका आ गयीं और यहीं इनकी मृत्यु हो गयी।

तुलसीदास

- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख संत थे। इनका जन्म राजापुर (बाँदा) में हुआ था, इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था।
- इन्होंने राम को विष्णु के औतार के रूप में चित्रण किया और सीता सहित राम की उपासना पर बल दिया। इन्होंने बताया कि भक्ति में निर्गुण ब्रह्म भी सगुण हो जाती है।
- इनकी महान रचना 'रामचरितमानस' है जो अवधी भाषा में रचित है और अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद मिलता है।

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन

14वीं-17वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का प्रसार-प्रचार हुआ। महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक ज्ञानेश्वर थे।

ज्ञानेश्वर-

- इन्होंने वाह्य आडम्बरों का विरोध किया। इन्हें विष्णु का ग्यारहवां अवतार माना जाता है। ये वरकरी संप्रदाय से भी संबंधित थे।

संत नामदेव-

- ये महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे। इनके उपदेश सिक्खों के आदिग्रंथ में संकलित हुए। ये भी वरकरी सम्प्रदाय से संबंधित थे।

एकनाथ-

- ये कृष्ण के परमभक्त थे। इन्होंने भागवत पुराण के 11वें स्कन्ध को 'नाथ भागवत' नाम से संकलित किया जिसे मराठी भाषा में लिखा ।

तुकाराम-

- ये महाराष्ट्र के कबीर कहे जाते हैं। इनके संकलन को अभंग कहा जाता है।

रामदास-

- ये शिवाजी के अध्यात्मिक गुरु थे।
- ये धरकारी संप्रदाय से संबंधित थे।

निर्गुण संत

1. कबीर दास 2. गुरु नानक 3. रैदास

कृष्ण भक्ति शाखा के संत

1. बल्लभाचार्य 2. विट्ठलनाथ 3. सूरदास 4. चैतन्य महाप्रभु 5. मीराबाई 6. रसखान

रामभक्ति शाखा के संत

1. तुलसीदास 2. अग्रदास 3. नाभादास

सिक्ख धर्म गुरु

1. गुरुनानक- सिक्ख धर्म के संस्थापक।
2. गुरु अंगद- गुरुमुखी लिपि के प्रवर्तक।
3. गुरु अमरदास- अनुशासन पर बल दिया।
4. गुरु रामदास- मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्राप्त भूमि पर अमृतसर नामक नगर बसाया।
5. गुरु अर्जुनदेव- आदि ग्रंथ का संकलन किया ।
   अमृतसर में स्वर्णमंदिर का निर्माण।
   जहांगीर द्वारा इन्हें मृत्युदंड दिया गया।
6. गुरु हरगोविन्द- अकाल तख्त की स्थापना की। सिक्खों को लड़ाकू बनाया।
7. गुरु हरराय- अपने पुत्र रामराय की औरंगजेब के दरबार में भेजा।
8. गुरु हरकिशन- चेचक के कारण जल्दी ही मृत्यु हो गई।
9. गुरु तेगबहादुर- इस्लाम धर्म न स्वीकार करने के कारण औरंगजेब ने मृत्युदंड दिया।
10. गुरु गोविन्द सिंह- खालसा पंथ की स्थापना की
    - औरंगजेब के जीवनपर्यंत संघर्ष किया।
    - नांदेर में इनकी हत्या कर दी गई।
    - इन्होंने गुरु पद समाप्त किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

सूफी आन्दोलन/सूफीवाद

- सूफीवाद का शुद्ध शब्द 'तसव्वुफ' अर्थात् 'परमसत्य' का ज्ञान प्राप्त करना है।
- सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'सूफ' से हुई है जिसका अर्थ है- 'ऊन'। अर्थात् वे मुस्लिम संत जो सांसारिकता से अलग होकर निर्धनता का जीवन व्यतीत करते थे और ऊनी कपड़ा पहनते थे वही सूफी कहलाए।
- सूफीवाद का उदय इस्लाम के उदय के साथ माना जाता है।
- प्रारम्भिक सूफी संत इस्लामी कानूनों को अनिवार्य मानते थे बाद में यह दो भाग में बँट गए-

1. **बा-शरा**-वे सूफी जो इस्लामी रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का पालन करना अनिवार्य समझते थे। वे बा-शरा कहलाए।
2. **बे-शरा**-वे सूफी संत जो इस्लामी परम्पराओं या कानूनों को पालन करना अनिवार्य नहीं समझते थे।

- सूफीवाद में प्रेम को महवपूर्ण स्थान दिया गया और यह प्रेम ईश्वरीय प्रेम है जिसको 'इश्क-ए-हकीकी' कहा जाता है।

भारत में सूफीवाद

- भारत में प्रारम्भिक सूफीवाद का इतिहास अस्पष्ट है लेकिन भारत में सूफीवाद का वास्तविक संस्थापक/प्रचारक अबुल हसन हुजिब्ररी को माना जाता है जिन्हें हजरत दातागंज भी कहा जाता है। ये महमूद गजनवी के समकालीन थे जो गजनवी के समय पंजाब आए।
- अबुल फजल ने 14 सिलसिलों की चर्चा किए लेकिन भारत में चार सिलसिले ही लोकप्रिय हुए-

1. चिश्ती सिलसिला

- चिश्ती सिलसिला का संस्थापक ख्वाजा अबूइश्हाकसामी चिश्ती थे। भारत में इस शिलशिला के संस्थापक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् ये भारत आए और अजमेर में जाकर अपनी खानकाह स्थापित किया और ये हिन्दू समुदायों के बीच काफी लोकप्रिय हुए।
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य शेख कुतुबुद्दीन बक्तियार काकी ने अपने जीवन काल में दिल्लो में एक खानकाह स्थापित किया। इनका संगीत से अत्यधिक लगाव था और संगीत सुनते-सुनते ही इनकी मृत्यु हो गयी और दिल्ली में इन्हें दफना दिया गया।
- शेख बक्तियार काकी के सबसे अच्छे शिष्य बाबा फरीद थे इन्होंने अपनी खानकाह अजोधन (पंजाब) में स्थापित किया। बाबा फरीद हिन्दुओं के काफी करीब थे और सिक्खों को आदि ग्रंथ में इनका उल्लेख किया गया। इनकी दरगाह पाकपाटन में बनाई गई। बाबा फरीद बलबन की पुत्री हुजैरा से विवाह किया था।
- बाबा फरीद के सबसे योग्य शिष्य हजरत निजामुद्दीन औलिया थे जो बचपन से ही सूफी संत हो गए।
- औलिया दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा लेकिन किसी सुल्तान का संरक्षण नहीं प्राप्त किया।
- इन्होंने चिश्ती सिलसिले को अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार किया इसलिए इन्हें महबूब-ए-इलाही' या 'सुल्तान-उल-औलिया' कहा जाता है। ये योग-साधना में अत्यन्त विश्वास करते थे।
- शेख शलीम चिश्ती अकबर के समकालीन थे जिसने सीकरी में अपनी खानकाह स्थापित किए और ये इस सिलसिले के अंतिम सूफी संत थे। इन्हीं के आशीर्वाद से अकबर को सलीम जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ।

2. सुहरावर्दी सिलसिला

- इस सिलसिला के संस्थापक शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी थे भारत में इसके संस्थापक शेख बहाउद्दीन जकारिया थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- बहाउद्दीन जकारिया भारत आने के बाद मुल्तान में अपनी खानकाह स्थापित की। इन्होंने समकालीन राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। ये इल्तुतमिश के राजकीय संरक्षण को प्राप्त किया।
- बहाउद्दीन जकारिया के बाद इनके पुत्र शेख सदरुद्दीन इस सिलसिले के प्रमुख संत हुए। इन्होंने उत्तराधिकार में प्राप्त सारी सम्पत्ति को दान कर दिया। इन्होंने बलबन के पुत्र मुहम्मद की पत्नी से विवाह किया था।
- शेख सदरुद्दीन के बाद इनके पुत्र शेख रुक्नुद्दीन अब्बुलफत सबसे बड़े सूफी संत हुए। इनके समय सुहरावर्दी सिलसिले का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार हुआ। इनका सुल्तानों एवं अमीरों से घनिष्ठ सम्बंध था। इन्होंने कहा कि लालच, क्रोध, अहंकार को छोड़ देना चाहिए क्योंकि ये लोगों को जानवर बना देते हैं।
- ये सिलसिला चिश्ती सिलसिले की भांति अखिल भारतीय सिलसिला नहीं बन सका। इसके लिए इसकी नीतियां जिम्मेदार थीं।
- इस सिलसिले के संतों ने शासक वर्ग एवं कुलीन वर्गों से संबंध बनाए और उन्हीं लोगों को अपने खानकाह में आने की अनुमति दी।

3. कादिरी सिलसिला

- इस सिलसिला का संस्थापक शेख अब्दुल कादिर जिलानी थे और भारत में इसके संस्थापक शेख मुहम्मद जिलानी थे।
- शेख मुहम्मद जिलानी 1481 ई. में भारत आए और उच्छ में अपनी खानकाह स्थापित किए।
- इस सिलसिले के संत शासकीय सेवा को अच्छा मानते थे और संगीत को प्रश्रय नहीं दिया।
- इस सिलसिले के संत हरे रंग की पगड़ी बांधते थे और गुलाब का फूल लगाते थे जो शांति का प्रतीक था।
- इस सिलसिले का सबसे बड़ा केन्द्र पंजाब के मुल्तान में था।

4. नक्शबंदी सिलसिला

- इस सिलसिले का संस्थापक शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी थे और भारत में इसके संस्थापक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह 1597 ई. में अकबर के समय काबुल से दिल्ली आए और यहीं अपनी खानकाह स्थापित किए। ये सूफियों में काफी कट्टर थे जो अकबर की उदार नीतियों का प्रतिकार करने दिल्ली आए।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह के बाद शेख फारुख अहमद सरहिन्दी इस सिलसिले के संत हुए। ये भी बहुत कट्टर संत थे। इन्होंने भारत में इस्लाम धर्म का भरपूर प्रचार-प्रसार किया इसीलिए इन्हें मुजादिया/मुजादिद (पुनर्जागरण करने वाला) की उपाधि दी गई। इन्होंने अपने आप को कयूम घोषित किया।
- इन्होंने कयूम का अर्थ जो इंसान-उल-कामिल से ऊपर बताया। अल्लाह ने कयूम का पद मुझे दिया है मेरे बाद मेरे तीन उत्तराधिकारी को ये पद और देगा।
- दूसरे कयूम-शेख मुहम्मद मासूम थे। औरंगजेब इन्हीं का शिष्य था और इन्हीं के प्रभाव में आकर कट्टरवादी शासक बना।
- भारत में सर्वाधिक कट्टर सिलसिला नक्सबंदी सिलसिला था। इस सिलसिले में शरियत के पालन पर पूर्णतः बल दिया जाता था। इस सिलसिले में शिया और हिन्दू के समान विरोधी थे।
- ये धर्म परिवर्तन में शक्ति के प्रयोग को अच्छा मानते थे और संगीत विरोधी भी थे। ये सरकारी सेवा को अच्छा मानते थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

सूफियों के प्रमुख सिलसिले एवं उनके संस्थापक		
सिलसिला	**संस्थापक**	**भारत में इसके संस्थापक**
1. चिश्ती सिलसिला	ख्वाजा अबूइशहाक सामी चिश्ती	ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
2. सुहरावर्दी सिलसिला	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	बहाउद्दीन जकारिया।
3. कादिरी सिलसिला	शेख अब्दुल कादिर जिलानी	शेख मुहम्मद जिलानी
4. नक्शबंदी सिलसिला	शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी	ख्वाजा बाकी बिल्लाह

प्रमुख सिलसिला और उनके संत			
चिश्ती सिलसिला	**सुहरावर्दी सिलसिला**	**कादिरी सिलसिला**	**नक्शीबंदी सिलसिला**
1. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	1. शेख बहाउद्दीन जकारिया	1. शेख मुहम्मद जिलानी	1. ख्वाजा बाकी बिल्लाह
2. शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	2. शेख सदरुद्दीन	2. शेख मीर मुहम्मद उर्फ (मियां मीर)	2. शेख फारुख अहमद सरहिन्दी
3. शेख हमीदुद्दीन नागौरी	3. शेख रुकनुद्दीन अबुल फत	3. शेख मुल्लाशाही बदख्शी	3. शेख मुहम्मद मासूम
4. बाबा फरीद			4. शेख हुजतुल्ला
5. शेख निजामुद्दीन औलिया			5. शेख अब्दुलअली जुबैर
6. शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी			6. शाहवली उल्ला
7. शेख सलीम चिश्ती			7. ख्वाजा मीर दर्द

मुगल वंश – (1526 ई.-1857 ई.)

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

- मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर था। इसका जन्म फरगना में 1483 ई. में हुआ था।
- बाबर पितृवंश की ओर से तैमूर वंश का 5वां एवं मातृवंश की ओर से चंगेज खां का चौदहवां वंशज था।
- 1494 में उमर शेख मिर्जा की मृत्यु के बाद यह फरगना का शासक बना। फरगना की राजधानी अन्दीजान थी।
- 1507 में इसने बादशाह की उपाधि धारण की।

बाबर का भारतीय अभियान

- मध्य एशिया की राजनीति की असफलता ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया।
- बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध के पहले भारत पर चार अभियान किया।
- प्रथम अभियान 1519 में हुआ जब इसने सीमा के दो स्थल बाजौर और भेरा को जीत लिया। बाजौर के युद्ध में बाबर ने सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- दूसरा अभियान भी 1519 में हुआ जब इसने पेशावर को जीता।
- तृतीय अभियान 1520 में हुआ, इस बार इसने स्यालकोट एवं सैयदपुर को जीता।
- चौथा अभियान 1524 में हुआ जब इसने लाहौर और दीपालपुर को जीतकर पंजाब में प्रवेश किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526)

- 1525 में पंजाब पर अधिकार करने के बाद बाबर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, इसकी सूचना पाकर इब्राहिम लोदी भी पानीपत की ओर प्रस्थान किया।
- 21 अप्रैल को पानीपत के मैदान में युद्ध हुआ, इसमें इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- इस युद्ध के बाद लोदी वंश का अंत हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुई।
- इस युद्ध में पहली बार बाबर ने तुलगमा युद्ध नीति के साथ तोपों का प्रयोग किया।
- इसके बाद बाबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

खानवा का युद्ध (1527)

- 1527 में यह युद्ध मेवाड़ के शासक राणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया। इस युद्ध का कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था।
- खानवा के युद्ध में इब्राहिम लोदी का चचेरा भाई महमूद लोदी राणा सांगा की तरफ से युद्ध किया।
- बाबर ने अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए जिहाद (धर्मयुद्ध) का नारा दिया।
- इस युद्ध में बाबर विजयी हुआ और गाजी की उपाधि धारण की।

चन्देरी का युद्ध (1528)

- यह युद्ध चन्देरी के शासक मेदिनीराय तथा बाबर के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में मेदिनीराय पराजित हुआ और चन्देरी पर बाबर का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में शेरशाह बाबार की तरफ से भाग लिया था।

घाघरा का युद्ध (1529)

- यह युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के चचेरे भाई महमूद लोदी के बीच लड़ा गया।
- महमूद लोदी इस युद्ध में पराजित हुआ और भाग गया।
- मध्यकालीन भारत का यह पहला युद्ध था जो जल और स्थल दोनों में लड़ा गया।
- भारत में बाबर की सफलता का मुख्य कारण उसका तोपखाना था।
- बाबर भारत का पहला मुस्लिम शासक था जिसने बादशाह की उपाधि धारण की।
- बाबर ने गज-ए-बाबरी नामक एक माप की इकाई का प्रचलन किया।
- बाबर ने तुर्की भाषा में तुज्क-ए-बाबरी (बाबरनामा) नाम से अपनी आत्मकथा लिखी।
- 1530 में बीमारी के कारण आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई तथा इसे काबुल में दफनाया गया।

बाबर द्वारा भारत में लड़े गये प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	किसे पराजित किया
1. पानीपत का प्रथम युद्ध	1526 ई.	इब्राहिम लोदी को
2. खानवा का युद्ध	1527 ई.	राणा सांगा को
3. चन्देरी का युद्ध	1528 ई.	मेदिनीराय को
4. घाघरा का युद्ध	1529 ई.	महमूद लोदी को

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

महत्वपूर्ण तथ्य

- बाबर के तोपखाने की देखभाल का दायित्व उस्ताद अली एवं मुस्तफा नामक दो तुर्की अधिकारियों के हाथों में था।
- बाबर ने पानीपत की विजय के बाद प्रत्येक काबुलवासी को शाहरुखी नामक एक-एक चाँदी का सिक्का दिया।
- इब्राहिम लोदी की माँ ने बाबर को खाने में जहर दिया था।
- बाबर ने तुलगमा युद्ध नीति उजबेगों से सीखी थी।
- मुगल शासक वस्तुतः चगताई तुर्क थे। मंगोल शासक चंगेज खां के एक पुत्र के नाम पर तुर्किस्तान क्षेत्र को चगताई कहा जाता था। मुगल इसी क्षेत्र के तुर्क थे, अतः इन्हें चगताई तुर्क कहा जाता था।

बाबर के पुत्र एवं पुत्रियाँ

हुमायूँ	कामरान	अस्करी	हिन्दाल	गुलबदन बेगम (पुत्री)
↓ माहम बेगम से उत्पन्न पुत्र	गुलरुख बेगम से उत्पन्न पुत्र	गुलरुख बेगम से उत्पन्न पुत्र	दिलदार बेगम से उत्पन्न पुत्र	दिलदार बेगम से उत्पन्न पुत्री

हुमायूँ (1530–1556)

- हुमायूँ नाम का आशय भाग्यशाली होता है लेकिन यह मुगल शासकों में सबसे अभागा शासक हुआ।
- 1530 में आगरा में इसका राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठते ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसकी मुख्य समस्यायें थीं—(1) अफगान समस्या (2) कमजोर सैन्य व्यवस्था (3) हुमायूँ के भाई

(1) अफगान समस्या

- महमूद लोदी अपने को अभी भी दिल्ली का वास्तविक उत्तराधिकारी मानता था।
- अफगानों में सबसे महत्वपूर्ण शेर खां था जो हुमायूँ के लिए सबसे बड़ी समस्या बना।

(2) कमजोर सैन्य व्यवस्था

- राजकोष खाली हो जाने के कारण हुमायूँ एक बड़ी सेना नहीं रख सका।

(3) हुमायूँ के भाई

- हुमायूँ ने अपने भाइयों के साथ उदारता का व्यवहार किया और साम्राज्य का वास्तविक विभाजन कर दिया।
- कामरान को काबुल, कंधार एवं पंजाब दे दिया, अस्करी को संभल का क्षेत्र एवं हिन्दाल को मेवात का क्षेत्र दे दिया।

हुमायूँ के अभियान

कालिंजर अभियान (1531)

- इस समय कालिंजर का शासक प्रतापरुद्रदेव था।
- एक महीने के घेरे के बाद जब किले को नहीं जीत सका तो प्रतापरुद्रदेव ने संधि कर ली।

चुनार का प्रथम घेरा (1532)

- चुनार का किला इस समय शेर खाँ सूर के अधीन था।
- हुमायूँ चार महीने तक इसका घेरा डाले रहा लेकिन जीत नहीं सका। शेर खाँ भी लड़ने की स्थिति में नहीं था।

मालवा एवं गुजरात अभियान (1534-35)

- इस समय मालवा का शासक बहादुरशाह था।

Nitin-Gupta.com ↓

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- हुमायूँ के आक्रमण से भयभीत होकर बहादुरशाह भाग गया और इस तरह बहुत आसानी से हुमायूँ का मालवा एवं गुजरात पर अधिकार हो गया।
- हुमायूँ ने अस्करी को यहां का सूबेदार नियुक्त किया।
- अस्करी कानून व्यवस्था बनाने में असफल रहा परिणामस्वरूप बहादुरशाह छिपे हुए स्थान से बाहर आया और अपनी प्रजा के सहयोग से गुजरात पर पुनः अधिकार किया।

चुनार का द्वितीय अभियान (1537)

- शेर खाँ ने 1537 में बंगाल पर आक्रमण किया।
- इस अवसर पर बंगाल के शासक गयासुद्दीन महमूद शाह ने हुमायूँ से सहायता की मांग की परंतु हुमायूँ सहायता नहीं दे सका।
- हुमायूँ ने शेर खाँ के चुनार किले पर आक्रमण अवश्य कर दिया। छह महीने के घेरे के बाद इसने चुनार का किला जीत लिया।

बंगाल अभियान (1538)

- बंगाल का शासक गयासुद्दीन महमूद शाह युद्ध में घायल होकर हुमायूँ के पास पहुँचा और वहीं इसकी मृत्यु हो गई।
- यह देखकर हुमायूँ के हृदय में दया उत्पन्न हुई और शेरखाँ के विरुद्ध अभियान किया।
- इस समय शेरखाँ बंगाल को जीतकर वापस बिहार आ गया।
- जब हुमायूँ बंगाल से वापस आ रहा था तभी शेरखाँ की सेना ने रास्ते में इसे घेर लिया परिणाम—

चौसा का युद्ध (1539)

- यह युद्ध शेरखाँ और हुमायूँ के बीच लड़ा गया।
- अनेक सैनिक गंगा एवं कर्मनासा नदी में डूब कर मर गए तथा हुमायूँ भी गंगा नदी में कूद पड़ा। निजाम नामक एक भिश्ती ने इसे डूबने से बचाया।
- इस तरह शेरखाँ इस युद्ध में विजयी रहा तथा इस उपलक्ष्य में शेरखाँ ने शेरशाह की उपाधि धारण की।

कन्नौज (विलग्राम) का युद्ध (1540)

- यह युद्ध भी हुमायूँ और शेरशाह के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में हुमायूँ पराजित हुआ।
- इस युद्ध के बाद शेरशाह का आगरा और दिल्ली पर अधिकार हो गया।

हुमायूँ का निर्वासन काल

- हुमायूँ तीन वर्ष तक राजस्थान और सिंध में इधर-उधर भटकता रहा।
- इस बीच में इसने 1541 में हमीदा बानो से विवाह किया जो सिया मौलवी अली अकबर जामी की पुत्री थी।
- 15 अक्टूबर 1542 को अमरकोट में राणा वीरशाल के महल में हमीदा बानो ने एक पुत्र को जन्म दिया जो अकबर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 1543 में हुमायूँ ने अकबर को अस्करी के संरक्षण में छोड़कर हमीदा बानो के साथ ईरान चला गया और यहां के शासक शाह तहमास्प के यहां शरण ली।
- तहमास्प की सहायता से 1545 में इसने अपने भाइयों से काबुल और कन्धार जीत लिया।

मच्छीवाड़ा का युद्ध (1555)

- यह युद्ध हुमायूँ और अफगान शासक इब्राहिम सूर द्वारा भेजी सेना के बीच लड़ा, इस युद्ध में हुमायूँ विजयी हुआ।

सरहिन्द का युद्ध (1555)

- यह युद्ध हुमायूँ और सिकन्दर सूर के बीच लड़ा।
- इसमें सिकन्दर सूर पराजित हुआ और भाग गया।
- सरहिन्द विजय का श्रेय हुमायूँ ने अकबर को दिया।
- जनवरी 1556 में जब यह अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था तभी सीढ़ियों से गिर गया और इसकी मृत्यु हो गई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- लेनपूल लिखता है कि हुमायूँ जीवन भर लुढ़कता रहा और अंत में लुढ़ककर ही इसकी मृत्यु हो गई।

हुमायूँ द्वारा लड़े गये प्रमुख युद्ध			
वर्ष	युद्ध का नाम	प्रतिद्वन्दी	परिणाम
1. 1531	कालिंजर का युद्ध	प्रतापरुद्रदेव	संधि
2. 1532	दोराहा का युद्ध	महमूद लोदी	विजयी
3. 1532	चुनार का युद्ध	शेर खाँ	संधि
4. 1539	चौंसा का युद्ध	शेर खाँ	पराजित
5. 1540	कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध	शेरशाह	पराजित
6. 1555	मच्छीवाड़ा का युद्ध	इब्राहिमसूर	विजयी
7. 1555	सरहिन्द का युद्ध	सिकन्दरसूर	विजयी

महत्वपूर्ण तथ्य

- हुमायूँ ने अपना राजदरबार सूफियाना ढंग से सुसज्जित किया था।
- हुमायूँ एवं शेरशाह के बीच झगड़े का मुख्य कारण बंगाल था।
- कन्नौज युद्ध का आँखों देखा वर्णन मिर्जा हैदर दुग्लत ने किया है क्योंकि यह इस युद्ध में हुमायूँ की तरफ से भाग लिया था।

सूरवंश (1540–55 ई.)

शेरशाह सूरी (1540-45)

- शेरशाह सूरी भारत में द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक था।
- शेरशाह ने जो कार्य किये उसके आधार पर न केवल साम्राज्य निर्माता बल्कि इसे अकबर का अग्रगामी कहा जाता है।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। इसका जन्म 1472 में बजबारा या नरनौल में हुआ तथा इसके पिता का नाम हसन था।
- 1494 में सिकन्दर लोदी ने जमाल खाँ को जौनपुर के फौजदार पद पर नियुक्त किया।
- 1494 में फरीद पिता से नाराज होकर जौनपुर आया और यहां पर इसने शिक्षा प्राप्त की।
- 1520 में हसन की मृत्यु के बाद यह अपनी पिता की गद्दी का मालिक हो गया।
- बहार खाँ (महमूदशाह) के साथ एक शिकार यात्रा में इसने एक शेर का वध कर दिया जिससे इसने शेरखां की उपाधि धारण की।
- लोहानी सरदारों के षडयंत्र के कारण इसे बिहार छोड़ना पड़ा और ये बाबर की सेना में शामिल हो गया और चन्देरी के युद्ध में इसने बाबर की तरफ से युद्ध किया।
- 1539 में इसने चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर शेरशाह की उपाधि धारण की।
- 1540 में इसने कन्नौज के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर भारत का सुल्तान बना।
- शेरशाह सुल्तान बनने से पहले 1529 ई. में बंगाल के शासक नुसरतशाह को पराजित कर 'हजरते-आला' की उपाधि धारण की। 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में हुमायूं को पराजित कर 'सुल्तान' की उपाधि धारण की।

बंगाल विद्रोह का दमन (1541)

- बंगाल के गवर्नर खिज्रखाँ ने 1541 में विद्रोह कर दिया।
- इसने अब बंगाल को 19 सरकारों में बांट दिया और प्रत्येक सरकार में एक शिकदार-ए-शिकदारान की नियुक्ति की जो सुल्तान के सीधे नियंत्रण में थे।

मालवा विजय (1542)

- इस समय यहां मल्लू खां (कादिरशाह) शासक था। इसने अपनी राजधानी उज्जयिनी में शेरशाह का स्वागत किया और मालवा राज्य शेरशाह को सौंप दिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

रायसीन विजय (1543)

- यहां का राजा पूरनमल चौहान था।
- शेरशाह ने रायसीन के दुर्ग को चालाकी एवं धोखे से विजित किया, जो इसके जीवन में कलंक था।

मारवाड़ विजय

- यहां का शासक मालदेव था।
- यह राजपूतों के शौर्य से इतना प्रभावित हुआ कि इसने कहा—मुठ्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान को प्रायः खो चुका था।

कालिंजर अभियान (1544)

- यहां का शासक कीर्ति सिंह था।
- कालिंजर का घेरा लगभग 7 महीने तक पड़ा रहा।
- जब किले को विजित नहीं कर सका तब शेरशाह ने मई 1545 में किले की दीवार को गोला बारूद से उड़ा देने की आज्ञा दी।
- युद्ध सामग्री में आग लगने से शेरशाह गम्भीर रूप से घायल हो गया और इसकी मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले इसे किले को जीतने का समाचार प्राप्त हो गया था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- सर्वप्रथम शेरशाह ने गज-ए-सिकन्दरी के माध्यम से भूमि की नाप कराई और कृषि योग्य भूमि को तीन श्रेणियों (1) उत्तम, (2) मध्यम, (3) निम्न श्रेणी तीनों का औसत उपज निकालकर 1/3 भाग भू-राजस्व निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था को जाब्ती प्रणाली के नाम से जाना जाता है।
- भू-राजस्व के अतिरिक्त किसानों से दो अन्य कर वसूल किये:—

  (i) **जरीबाना** :—यह भूमि की नाम के लिए लिया जाने वाला कर था जो उपज का ढाई प्रतिशत था।

  (ii) **महासीलाना** :— यह कर वसूली के लिये लिया जाता था जो उपज का 5 प्रतिशत था। इसने किसानों को भूमि का स्वामी बनाया और किसानों को पट्टा दिया और किसानों से इसने कबूलियत (स्वीकृत पत्र) प्राप्त किया।
- इसने अनेक सड़कों का निर्माण कराया जिसमें सबसे प्रमुख थी बंगाल के सोनारगांव से लेकर पंजाब में अटक तक। इसे सड़क-ए-आजम के नाम से जाना जाता था।

मुद्रा

- शेरशाह ने पुराने सिक्कों को बंद करके सोने-चाँदी-तांबे के नए सिक्के चलाये।
- इसने सर्वप्रथम चाँदी का रुपया चलाया और तांबे का दाम चलाया।
- रुपये और दाम में 1:64 का अनुपात था।
- शेरशाह ने पटना नगर की स्थापना की थी।
- इसने सहसराम में अपने लिए मकबरे का निर्माण कराया जो एक कृत्रिम झील के मध्य में स्थित है।

शेरशाह द्वारा लिया जाने वाला कर

1. **खिराज**—(भूमि कर) औसत उपज का 1/3 भाग
2. **जरीबाना**—भूमि की नाप के लिए उपज का $2\frac{1}{2}\%$
3. **महासीलाना**—राजस्व अधिकारियों के लिए उपज का 5%

शेरशाह द्वारा बनवाई गई सड़कें

1. **सड़क-ए-आजम**—यह सड़क बंगाल के सोनार गांव से लेकर पंजाब में अटक तक जाती थी। लगभग 1500 मील लम्बी थी।
2. आगरा से बुरहानपुर तक जाती थी।
3. आगरा से चित्तौड़ तक जाती थी।
4. लाहौर से मुल्तान तक जाती थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

शेरशाह द्वारा चलाये गये सिक्के

—शेरशाह ने अपने सिक्कों पर फारसी भाषा के साथ-साथ देवनागरी में भी लेख लिखवाये।

—**रुपया**–यह चाँदी का सिक्का था। रुपया का प्रचलन सर्वप्रथम शेरशाह ने किया था।

—**अशरफ**–यह सोने का सिक्का था।

—**दाम**–यह ताँबे का सिक्का था।

अकबर (1556-1605)

- अकबर का जन्म 1542 में अमरकोट में हुआ था तथा इसके बचपन का नाम बदरुद्दीन था।
- हुमायूँ जब फारस गया तब इसे अस्करी के संरक्षण में छोड़ गया।
- हुमायूँ एवं अकबर की दुबारा मुलाकात 3 वर्ष बाद हुई तभी इसका नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रखा गया।
- हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर पंजाब में सिकन्दर सूर के विरुद्ध सैन्य अभियान में व्यस्त था।
- हुमायूँ की मृत्यु की सूचना मिलने पर पंजाब में गुरुदासपुर जिले में स्थित कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी 1556 को अकबर का राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठने के बाद अकबर को पानीपत का द्वितीय युद्ध लड़ना पड़ा।
- यह युद्ध मुहम्मद आदिल शाह के सेनापति हेमू और अकबर के बीच लड़ा गया।
- प्रारम्भ में हेमू ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार करके दिल्ली में अपने को स्वतंत्र शासक घोषित किया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- जब हेमू पंजाब की ओर बढ़ा तो 5 नवम्बर 1556 को पानीपत के मैदान में अकबर की सेना के साथ युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में हेमू पराजित हुआ और इसकी हत्या कर दी गई।
- पानीपत के प्रथम युद्ध ने भारत में मुगलवंश की स्थापना की थी किन्तु दूसरे युद्ध ने भारत में मुगलों की शक्ति को पुनः स्थापित किया।
- जब बैरम खाँ मक्का जा रहा था तब गुजरात में पाटन नामक स्थान पर 1561 में इसकी हत्या कर दी गई।
- 1560 से 1564 तक अकबर हरम की स्त्रियों के प्रभाव में रहा। अकबर पर इसकी धाय मां माहमअनगा का सर्वाधिक प्रभाव था।
- 4 वर्ष के इस शासन को पर्दा शासन के नाम से जाना जाता है।

साम्राज्य विस्तार

- मालवा के विरुद्ध अभियान से लेकर असीरगढ़ के पतन तक चार दशकों (40 वर्ष) के दौरान अकबर की भूमिका एक महान विजेता तथा साम्राज्य निर्माता की थी।

मालवा विजय

- सर्वप्रथम अकबर ने 1561-62 में मालवा के शासक बाजबहादुर को पराजित कर मालवा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

गोडवाना विजय

- 1564 में अकबर ने गोडवाना अभियान किया और यहां की राजधानी चौरागढ़ के निकट एक युद्ध में रानी दुर्गावती को पराजित कर दिया और यहां मुगलों का अधिकार हो गया।

राजपूताना विजय

- राजस्थान में साम्राज्य विस्तार के लिए अकबर द्वारा अपनाई गई नीति की विशेषता थी :—

  (1) स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार करने वाले अथवा विवाह संबंधों के इच्छुक राजपूत राजाओं को अपनी

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अधीनता में लेना और उनका राज्य उन्हें वापस कर देना तथा मुगल सेना में उन्हें उच्च पद प्रदान करना।

(2) शत्रुतापूर्ण व्यवहार में लिप्त राजाओं को पराजित कर उनके राज्य को मुगल साम्राज्य में मिलाना।

- आमेर (जयपुर) के शासक भारमल पहला राजपूत राजा था जिसने 1562 में स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्री का विवाह अकबर के साथ किया।
- अकबर ने भारमल के पुत्र भगवानदास एवं पौत्र मानसिंह को उच्च पद प्रदान किया।
- राजपूत राज्यों में मेवाड़ ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
- इस समय मेवाड़ का शासक राणा उदय सिंह था।
- 1567 में अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करके उसे जीत लिया इस अवसर पर उदयसिंह जंगलों में भाग गए थे।
- 1572 में राणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र राणा प्रताप सिंह मेवाड़ के शासक बने।
- राणा प्रताप ने जीवन पर्यन्त अकबर से संघर्ष किया।
- 1576 में अकबर ने राणा प्रताप के विरुद्ध आक्रमण किया परिणामस्वरूप हल्दीघाटी का युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में मुगल विजयी रहे।

गुजरात विजय

- इस समय गुजरात का शासक मुजफ्फर खाँ तृतीय था।
- 1572 में अकबर ने स्वयं गुजरात अभियान किया तथा 1573 में इसे जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

दक्षिण विजय

- अकबर पहला मुगल शासक था जिसने दक्षिण अभियान किया।
- इस समय दक्षिण में खान देश, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा प्रमुख सल्तनत थे।
- खान देश दक्षिण का पहला राज्य था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

अहमदनगर अभियान

- सर्वप्रथम 1593 में अकबर ने एक मुगल सेना अहमदनगर विजय के लिए भेजी।
- इस समय अहमदनगर की सुरक्षा का भार चांद बीबी पर था जो अहमदनगर के शासक निजामशाह की पुत्री थी।
- 1601 में इसने किले को जीत लिया तथा दक्षिण विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने दक्षिण के बादशाह की उपाधि धारण की।

अन्य कार्य

- अकबर 1562 में युद्ध में बंदी बनाये गए लोगों के लिए दास प्रथा समाप्त कर दिया।
- 1563 में इसने तीर्थ यात्रा कर तथा 1564 में जजिया कर समाप्त किया।
- 1575 में फतेहपुर सीकरी में इसने एक इबादतखाना का निर्माण कराया। इसका उद्देश्य धर्म की सत्यता को जानने की उत्सुकता थी।
- जैन विद्वानों में हरि विजय सूरि जिसको इसने जगतगुरु तथा जिन चन्द्र सूरि जिसे इसने युग प्रधान की उपाधि दी। अकबर इनसे प्रभावित हुआ।
- हिन्दू धर्म के कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को ग्रहण किया। यह हिन्दू धर्म से सर्वाधिक प्रभावित हुआ।
- 1580 में पहला ईसाई मिशन फतेहपुर सीकरी पहुँचा जिसमें मॉसरेट, अक्वेविया और एनरिक्वेज इसके सदस्य थे। अकबर ने इनसे भी वार्ता की।
- सितम्बर 1579 में महजर घोषणा-पत्र नाम से एक दस्तावेज जारी किया जिसकी रचना शेख मुबारक ने की थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इसके द्वारा अकबर को इस्लाम धर्म से सम्बंधित विवादों के निबटारे का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हुआ और अब यह इमाम-ए-आदिल हो गया।
- महजर में अकबर को अमीर-उल-मोमनिन (खलीफा) कहा गया है।
- 1582 में अकबर ने दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना की।
- अबुल फजल इस सम्प्रदाय का मुख्य पुरोहित बना।
- प्रतिष्ठित हिन्दुओं में केवल बीरबल ने ही इसे स्वीकार किया।
- अकबर के दीन-ए-इलाही के बारे में स्मिथ ने लिखा है कि दीन-ए-इलाही अकबर की बुद्धिमत्ता का नहीं बल्कि इसकी मूर्खता का प्रतीक था।

अकबर के नौरत्न

1. अबुल फजल	6. टोडरमल
2. फैजी	7. अब्दुर्रहीम खानखाना
3. बीरबल	8. मुल्ला दो प्याजा
4. तानसेन	9. हकीम हुमाम
5. राजा मानसिंह	

अकबर के प्रमुख कार्य

— 1562 ई. में दास प्रथा की समाप्ति
— 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर की समाप्ति
— 1564 ई. में जजिया कर की समाप्ति
— 1575 ई. में इबादतखाने का निर्माण
— 1578 ई. में इबादतखाना सभी धर्मों के विद्वानों के लिए खोला गया।
— 1579 ई. में महजर की घोषणा
— 1582 ई. में दीन-ए-इलाही की स्थापना

अकबर के समय में प्रमुख विद्वान

1. अबुल फजल	—	अकबरनामा
2. निजामुद्दीन अहमद	—	तबकात-ए-अकबरी
3. अब्दुल कादिर बदाँयूनी	—	मुन्तखब-उत-तवारीख
4. फैजी	—	कवि थे अनेक संस्कृत ग्रंथों का फारसी अनुवाद किया
5. बीरबल	—	हिन्दी के विद्वान
6. अब्दुर्रहीम खानखाना	—	रहीम सतसई
7. राजा भानसिंह	—	हिन्दी के विद्वान

महत्वपूर्ण तथ्य

- अकबर का प्रथम विवाह हिन्दाल की पुत्री रुकैया बेगम से हुआ था।
- मेड़ता अभियान 1562 के दौरान अकबर ने युद्धबंदियों के लिए दास प्रथा का निषेध किया।
- अकबर ने जैन आचार्य विजयसेन सूरि को काली सरस्वती की उपाधि दी।
- अकबर ने कृष्णभक्ति शाखा के संत विट्ठलनाथ को गोकुल एवं जैतपुर की जागीर प्रदान की थी।
- बीरबल का वास्तविक नाम महेशदास था। ये काल्पी के निवासी थे। ये ब्रह्मा उपनाम से कवितायें लिखते थे।
- अकबर के राजकवि फैजी थे।
- कृष्ण भक्ति शाखा के संत नंददास अकबर के अनुरोध पर उसके दरबार में गये और वही गीत गाते हुए ईश्वरलीन हो गये।
- अकबर की इच्छानुसार अब्दुल कादिर बदायूंनी ने रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद किया था।
- अकबर सभी धर्मों का सम्मान करता था। इसके समय में कानून की दृष्टि में सभी समान थे। यह निरंकुश होते हुए भी प्रजा कल्याण में रुचि लेता था। अतः इसे 'प्रबुद्ध निरंकुश' कहा जा सकता है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- भू-राजस्व प्रशासन के क्षेत्र में शेरशाह एवं अकबर के बीच टोडरमल नैरन्तर्य की कड़ी थे। वस्तुतः टोडरमल शेरशाह के समय में भी भू-राजस्व अधिकारी रह चुके थे।

जहांगीर (1605-1627)

- जहांगीर के बचपन का नाम सलीम था।
- इसका पहला विवाह मानसिंह की बहन मानबाई के साथ हुआ था जिसे इसने शाहबेगम की उपाधि दी।
- 1601 में मानबाई ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली।
- इसका दूसरा विवाह जोधाबाई या जगत गुसाई के साथ हुआ।
- 1599 में जहांगीर ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया और इलाहाबाद आकर स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगा।
- 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद आगरा के किले में इसका राज्याभिषेक हुआ।
- गद्दी पर बैठते ही इसने 12 अध्यादेश जारी किये जिनमें महत्वपूर्ण थे छोटे-छोटे अनेक करों की समाप्ति, मद्यनिषेध, अस्पतालों एवं हकीमों की व्यवस्था, रविवार एवं बृहस्पतिवार को पशुबलि पर रोक तथा पुराने कैदियों की रिहाई।
- जहांगीर एक न्यायप्रिय शासक था, सबको न्याय मिले इसके लिए इसने सोने की जंजीर लगवाई जिसे जंजीर-ए-अदली के नाम से जाना जाता था।
- एक जैन संत मानसिंह ने इसके बारे में भविष्यवाणी की थी कि इसका शासन दो वर्ष से अधिक नहीं चलेगा।

खुशरो का विद्रोह

- 1606 में खुशरो विद्रोह करके तनतारन (पंजाब) पहुँचा और सिक्खों के पांचवे गुरु अर्जुन से आशीर्वाद प्राप्त किया।
- लाहौर के पास भैरावल नामक स्थान पर जहांगीर और खुशरो के बीच युद्ध हुआ जिसमें खुशरो पराजित हुआ और बंदी बना लिया गया।
- जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव को मृत्यु दण्ड दे दिया था।

मेवाड़ अभियान

- इस समय यहां का शासक अमरसिंह था।
- 1614 में खुर्रम के नेतृत्व में मेवाड़ अभियान हुआ।
- खुर्रम के आतंक से घबराकर अमर सिंह ने जहांगीर से संधि करने को तैयार हो गया।

मेवाड़ की संधि

- 1615 में इस संधि के द्वारा अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।
- जहांगीर ने चित्तौड़ सहित सम्पूर्ण मेवाड़ अमरसिंह को वापस कर दिया तथा उसके पुत्र कर्णसिंह को मुगलदरबार में उच्च पद प्रदान किया।

नूरजहां

- इसका जन्म 1577 में हुआ था।
- इसका प्रारम्भिक नाम मेहरुन्निसा था।
- इसके पिता ग्यासबेग (एतमादुद्दौला) थे तथा माता का नाम असमत बेगम था जिन्होंने गुलाब के फूल से इत्र का अविष्कार किया।
- 1594 में मेहरुन्निसा का विवाह अलीकुली खाँ से हुआ।
- नूरजहां का प्रशासन में अत्यधिक प्रभाव था।
- जहांगीर स्वयं कहता था, कि मैंने बादशाहत नूरजहां बेगम को सौंप दिया है अब मुझे शेर भर शराब और आधा शेर कबाब चाहिए।
- 1627 में जहांगीर कश्मीर में रुका तथा जब यह कश्मीर से वापस आ रहा था तब भिम्बर नामक स्थान पर इसकी मृत्यु हो गई।
- इसके शव को लाहौर लाया गया और यहीं पर शाहदरा में दफनाया गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

दक्षिण अभियान

- अकबर की मृत्यु के बाद अहमदनगर के वजीर मलिक अम्बर के नेतृत्व में अहमदनगर स्वतंत्र हो गया था।
- 1616 में खुर्रम के नेतृत्व में दक्षिण अभियान हुआ तथा इसके आतंक से घबराकर मलिक अंबर ने जहांगीर की अधीनता स्वीकार कर ली।
- दक्षिण विजय के उपलक्ष में जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दी।

खुर्रम का विद्रोह

- 1623 में खुर्रम ने जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया परन्तु असफल रहा।
- अंततः 1626 में जहांगीर से इसने क्षमा मांगकर विद्रोह समाप्त कर दिया।

जहांगीर के समय की घटनायें

1. खुशरो का विद्रोह	—	1606 ई.
2. मेवाड़ अभियान	—	1614 ई.
3. अहमदनगर अभियान	—	1616 ई.
4. कंधार की पराजय	—	1622 ई.
5. खुर्रम का विद्रोह	—	1623-26 ई.
6. महावत खाँ का विद्रोह	—	1625 ई.

महत्वपूर्ण तथ्य

- जहाँगीर का जन्म सीकरी गाँव में हुआ था।
- जहाँगीर ने दानियाल (भाई) के पुत्रों को ईसाई धर्म ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की। इसकी प्रशंसा स्पेन के तत्कालीन शासक फिलिप III ने किया है।
- मेहरुन्निसा का शाब्दिक अर्थ है 'अत्यंत प्यारी'।

जहांगीर के 12 अध्यादेश

1. छोटे-छोटे अनेक करों की समाप्ति।
2. सड़कों पर चोरी-डकैती रोकने से सम्बन्धित नियम।
3. दूसरों के घरों पर अधिकार करने एवं अंग-भंग का निषेध।
4. मादक पदार्थों के प्रयोग पर रोक।
5. अस्पतालों का निर्माण एवं हकीमों की नियुक्ति।
6. मृत्यु के बाद उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम।
7. बृहस्पतिवार एवं रविवार के दिन पशु वध पर रोक।
8. रविवार के दिन का विशेष सम्मान।
9. मनसब एवं जागीरों की पुष्टि।
10. मदद-ए-माश की पुष्टि।
11. धशबी का निषेध अर्थात् अपने कार्य क्षेत्र में वैवाहिक सम्बन्धों पर रोक।
12. कर्मचारियों के वेतनभत्ते में वृद्धि तथा कैदियों की रिहाई।

शाहजहां (1628-1658)

- 1592 में लाहौर में शाहजहां का जन्म हुआ था।
- इसकी माता का नाम जोधाबाई (जगतगुसाई) था।
- 1612 में इसका विवाह आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानो बेगम से हुआ जिसे शाहजहां ने मुमताज महल की उपाधि दी।
- जहांगीर की मृत्यु के समय शाहजहां दक्षिण भारत में था।
- शाहजहां अकबर और जहांगीर की तुलना में धार्मिक रूप से कट्टर था।
- शाहजहां ने नए मंदिरों के निर्माण पर रोक लगा दिया।
- इसने पुनः तीर्थ यात्रा कर लगाया।
- इसने ईसाई धर्म परिवर्तन पर रोक लगाई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

राजनीतिक घटना

(1) बुन्देलों का विद्रोह

- इसके समय में 1628 में ओरछा के शासक जुझारसिंह ने विद्रोह किया।
- अंततः 1635 में इस विद्रोह का अंत हुआ और जुझारसिंह की हत्या कर दी गई।

(2) पुर्तगालियों का दमन

- 1632 में शाहजहां ने बंगाल के सूबेदार कासिम खाँ को हुगली के पुर्तगालियों का दमन करने का आदेश दिया।
- कासिम खाँ ने हुगली पर आक्रमण करके अनेकों पुर्तगालियों की हत्या की और हजारों बंदी बना लिये गए।

दक्षिण अभियान

- 1630 में शाहजहां ने अहमदनगर अभियान किया।
- इस तरह शाहजहां ने दक्षिण में स्थाई रूप से मुगल सत्ता स्थापित किया और औरंगजेब को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया।

कन्धार विजय

- 1638 में यहां के प्रशासक अलीमर्दान खाँ को शाहजहां ने अपने पक्ष में कर लिया।
- इसने कन्धार शाहजहां को सौंप दिया।

शाहजहां के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध

- 1657 में शाहजहां बीमार पड़ा एवं दक्षिण भारत में इसके मृत्यु की अफवाह उड़ गई परिणामस्वरूप मुराद एवं शाहशुजा ने अपने को सम्राट घोषित किया।
- औरंगजेब ने धैर्य से काम लिया और मुराद को अपनी तरफ मिलाकर दारा शिकोह के विरुद्ध युद्ध किया।

शाहजहाँ के समय में होने वाले विद्रोह

1. बुंदेलों का विद्रोह —1628 से 1635 तक
2. खान-ए-जहाँ लोदी का विद्रोह —1629 से 1633 तक
3. पुर्तगालियों का दमन —1632 ई. में

शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध		
1. बहादुरपुर का युद्ध	1658 में	शाहशुजा एवं दारा की शाही सेना।
2. धरमत का युद्ध	1658 में	औरंगजेब एवं मुराद की संयुक्त सेना तथा दारा की शाही सेना।
3. सामूगढ़ का युद्ध	1658	औरंगजेब एवं मुराद की संयुक्त सेना एवं दारा के बीच।
4. खजुवा का युद्ध	1659	औरंगजेब एवं शाहशुजा के बीच
5. देवराई का युद्ध	1659	औरंगजेब एवं दारा के बीच

महत्वपूर्ण तथ्य

- शाहजहाँ का वास्तविक नाम खुर्रम था जिसका अर्थ है 'आनंददायक'।
- शाहजहाँ ने तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) का निर्माण कराया। इस सिंहासन का प्रारुपकर्ता जेरोनियो-विरोनियो नामक एक यूरोपीय था।
- शाहजहाँ ने कवीन्द्राचार्य के अनुरोध पर इलाहाबाद एवं बनारस में तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया था।
- शाहजहाँ ने दाराशिकोह को "शाह बुलंद इकबाल" की सर्वोच्च उपाधि दी थी।
- दाराशिकोह कादिरी सिलसिले के सूफी संत मुल्लाशाह बदख्शी का शिष्य था।
- दाराशिकोह ने भगवद् गीता, योग वशिष्ठ तथा 52 उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया। उपनिषदों के अनुवाद के सिर्र-ए-अकबर नाम दिया।
- दारा ने सफीनत-उल-औलिया तथा मज्म-उल-बहरैन नामक फारसी ग्रंथ की रचना की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इटालवी यात्री मनूची दारा के तोपची के रूप में कार्य किया।
- कैदी जीवन व्यतीत करने के दौरान शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा बेगम ने उसकी सेवा की।

औरंगजेब (1658-1707)

- इसका जन्म 1618 में उज्जैन के निकट दोहद नामक स्थान पर हुआ था।
- इसने दो बार अपना राज्याभिषेक करवाया। 1658 में आगरा में और 1659 में दिल्ली में।
- गद्दी पर बैठते ही इसने छोटे-छोटे 80 करों को समाप्त कर दिया।
- इस्लाम धर्म के प्रति इसकी कट्टरता इतनी अधिक थी कि इसे दरबेश एवं जिंदा पीर के नाम से जाना जाता था।
- इसका राजत्व का सिद्धांत इस्लामी राजत्व का सिद्धांत था।

जाटों का विद्रोह

- 1669 में गोकुल के नेतृत्व में मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों में जाटों ने विद्रोह किया।
- 1670 में मथुरा के केशवराय मंदिर को तुड़वाकर इसके स्थान पर मस्जिद का निर्माण कराया तो यहां विद्रोह बढ़ गया।

सतनामियों का विद्रोह

- 1672 में मेवात और नारानौल क्षेत्र में सतनामियों ने विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह एक मुगल सिपाही तथा एक सतनामी साधु के सामान्य झगड़े से शुरु हुआ और बड़ा रूप धारण कर लिया।

सिक्खों का विद्रोह

- औरंगजेब के समय सिक्खों के नए गुरु तेगबहादुर थे।
- इन्होंने औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध किया।
- औरंगजेब ने इन्हें दिल्ली बुलाया और इस्लाम धर्म स्वीकार करने को कहा।
- गुरु तेगबहादुर ने इसका विरोध किया और जिसकी वजह से 1775 में इन्हें मृत्यु दण्ड दे दिया गया।
- सिक्खों के 10वें गुरु गुरुगोविंद सिंह हुए।
- इन्होंने 80 हजार सैनिकों की खालसा सेना तैयार की।

अकबर का विद्रोह

- यह औरंगजेब का पुत्र था।
- 1681 में इसने विद्रोह कर दिया और भागकर मराठा शासक सम्भाजी के पास रायगढ़ में शरण ली।
- 1682 में यह फारस चला गया।

औरंगजेब की दक्षिण विजय

- औरंगजेब की दक्षिण विजय का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य का विस्तार करना था।
- इसके अतिरिक्त दक्षिण में मराठे मुगलों के लिए भावी खतरा बन रहे थे अतः इनकी शक्ति को समाप्त करना औरंगजेब का उद्देश्य था।

बीजापुर अभियान (1685-86)

- इस समय बीजापुर का सुल्तान सिकन्दर आदिल शाह था।
- औरंगजेब ने इसे पराजित कर इसके किले पर अधिकार कर लिया और इसे 1 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

गोलकुण्डा अभियान (1686-87)

- इस समय गोलकुण्डा का शासक अबुल हसन कुतुबशाह था।
- औरंगजेब ने इसे बंदी बना लिया और इसे 50 हजार रुपये वार्षिक पेंशन देकर इसके राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

मराठों से संघर्ष

- मराठों ने औरंगजेब को अत्यधिक परेशान किया।
- मराठों में शिवाजी ने मुगलों से निरन्तर संघर्ष किया और महाराष्ट्र में मराठों के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- शिवाजी के बाद इनका पुत्र संभाजी मुगलों से निरन्तर संघर्ष किया।
- 1689 में औरंगजेब ने सम्भाजी को बन्दी बना लिया और इनकी हत्या कर दी तथा मराठा राज्य पर अधिकार कर लिया।
- 1707 में अहमदनगर के पास औरंगजेब की मृत्यु हो गई और औरंगाबाद में इसको दफनाया गया।

औरंगजेब की प्रतिक्रियावादी कार्य

1. हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाना।
2. राजपूतों को छोड़कर हिन्दुओं को अच्छे घोड़े एवं पालकी की सवारी पर रोक।
3. मंदिरों के निर्माण एवं मरम्मत पर रोक।
4. संगीत पर प्रतिबंध।
5. इतिहास लेखन एवं ज्योतिष पर रोक।
6. मंदिरों को तोड़ने का आदेश।

औरंगजेब के काल में होने वाले विद्रोह

1. जाटों का विद्रोह	गोकुल के नेतृत्व में प्रारंभ	1669 से जीवन पर्यन्त
2. सतनामियों का विद्रोह		1672-73
3. सिक्खों का विद्रोह	गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में	1675 से जीवन पर्यन्त
4. राजपूतों का विद्रोह		1678 से जीवन पर्यन्त
5. अकबर का विद्रोह		1681-82 ई. में
6. बुंदेलों का विद्रोह	चंपतराय एवं छत्रशाल के नेतृत्व में	1672 से जीवन पर्यन्त चला।

महत्वपूर्ण तथ्य

- औरंगजेब को आलमगीर I भी कहा जाता है। यह इसकी उपाधि थी।
- औरंगजेब ने कुरान की हस्तलिखित दो प्रतियाँ मक्का और मदीना भेजा।
- पुत्र जन्म के समय हिन्दुओं से लिया जाने वाला कर समाप्त किया।
- इसके समय में प्रशासन में सर्वाधिक हिन्दू मनसबदार थे।

उत्तर मुगलकाल (1707 ई.-1857 ई.)

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीन जीवित पुत्रों मुअज्जम उर्फ शाहआलम, मुहम्मद आजम एवं कामबख्श के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें मुअज्जम उर्फ शाहआलम विजयी हुआ और बहादुरशाह I के नाम से सम्राट बना।

बहादुरशाह I (1707-12 ई.)

- यह धार्मिक दृष्टि से औरंगजेब की तुलना में उदार था।
- उत्तराधिकार के युद्ध में बहादुरशाह I का साथ गुरू गोविन्दसिंह ने दिया था।
- इसके समय में बँदा बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने विद्रोह किया। यह विद्रोह का दमन करने में असफल रहा।
- इसे शाह-ए-बेखबर उपनाम से जाना जाता है।

बहादुरशाह I के 4 पुत्र

1. जहाँदारशाह
2. अजीम-उस-शान
3. रफी-उस-शान
4. जमान शाह

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

जहाँदारशाह (1712-13 ई.)

- उत्तराधिकार के युद्ध में जहाँदारशाह विजयी हुआ।
- जहाँदारशाह ने लाल कुँवर नामक वेश्या को अपने महल में रखा।
- इसने जजिया कर को समाप्त किया।

फर्रुखशियर (1713-19 ई.)

- यह अजीम-उस-शान का पुत्र था।
- यह सैय्यद बन्धुओं की सहायता से सम्राट बना। अतः इसने सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर एवं सैय्यद हुसैन अली को मीरबक्शी तथा दक्षिण के सूबेदार का पद दिया।
- इसके समय में सैय्यद बन्धु साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बन गये।
- इसके समय में बँदाबहादुर के नेतृत्व में सिक्ख विद्रोह का अंत हुआ।
- इसने तीर्थयात्रा कर समाप्त किया।
- इसके समय में 1715 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक प्रतिनिधिमंडल जॉन सरमन की अध्यक्षता में इसके दरबार में पहुँचा। इस प्रतिनिधिमंडल में हैमिल्टन नामक एक चिकित्सक भी था जिसने फर्रुखशियर को एक गंभीर रोग से मुक्ति दिलाई। परिणामस्वरूप इसने 1717 ई. में एक फरमान जारी करके कम्पनी को अनेक रियायतें दी।

रफी-उद्-दरजात (1719-19 ई.)

- यह रफी-उस-शान का पुत्र था।

रफी-उद्-दौला (1719-19 ई.)

- यह भी रफी-उस-शान का पुत्र था इसने शाहजहाँ द्वितीय की उपाधि धारण की।

मुहम्मदशाह 'रंगीला' (1719-48 ई.)

- इसका वास्तविक नाम रोशन अख्तर था। यह जमानशाह का पुत्र था।
- इसके समय में सैय्यद बन्धुओं का अंत हुआ।
- इसके समय में चिनकुलिच खाँ (निजाम-उल-मुल्क) ने 1724 में हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- इसके समय में फारस के शासक नादिरशाह का 1739 में भारत पर आक्रमण हुआ। युद्ध में मुहम्मद शाह रंगीला पराजित हुआ।

अहमदशाह (1748-54 ई.)

- यह बहुत ही विलासी एवं अयोग्य शासक था। इसके समय में राज्य की अर्थव्यवस्था बहुत ही कमजोर हो गई थी।
- इसी के शासनकाल में अफगानिस्तान का शासक अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब पर आक्रमण किया अंततः इसने पंजाब एवं सिंध अहमदशाह अब्दाली को दे दिया।

आलमगीर II (1754-58 ई.)

- इसके शासनकाल में अहमदशाह अब्दाली दिल्ली आया और एक रूहेला सरदार नजीबुद्दौला को अपना प्रतिनिधि तथा साम्राज्य का मीरबक्शी नियुक्त किया।
- इसी के शासनकाल में प्लासी का युद्ध हुआ था।

शाहआलम II (1759-1806 ई.)

- इसके समय में 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ।
- 1765 में इलाहाबाद की संधि द्वारा इसने अंग्रेजी कम्पनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्रदान की।
- 1788 गुलाम कादिर नामक एक अफगान ने इसे अंधा कर दिया। अतः यह अंधा बादशाह के नाम से जाना जाता है।

अकबर II (1806-1837 ई.)

- मुगल सम्राट के नाम के सिक्के भी बंद करा दिये गये।

बहादुरशाह II ''जफर'' (1837-1857 ई.)

- इसके समय में 1857 का विद्रोह हुआ जिसमें विद्रोहियों ने इसे दिल्ली में हिन्दुस्तान का सम्राट घोषित किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- अंग्रेजों ने इसे बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया यहीं 1862 में इसकी मृत्यु हो गई। इसकी कब्र रंगून में है।

सैय्यद बन्धु

- ये हिन्दुस्तानी मुस्लिम अमीरों के नेता थे।
- सैय्यद अब्दुल्ला खाँ एवं सैय्यद हुसैन अली दोनों भाई थे।
- फर्रुखशियर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर नियुक्त किया और बहादुर यमीन-उद्-दौला तथा यार-ए-वफादार की उपाधि दी।
- फर्रुखशियर ने सैय्यद हुसैन अली को मीर बक्शी एवं दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर बहादुर फिरोज जंग, उमादुल्मुल्क, अमीर-उल-उमर आदि उपाधि दी।
- ये दोनों भाई सम्राट निर्माता (King Maker) बन गये।

महत्वपूर्ण तथ्य

- जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह एक महान खगोलशास्त्री था। इसने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, बनारस और मथुरा में आधुनिक उपकरणों से युक्त वेधशाला का निर्माण कराया था। इलाहाबाद में इसने वेधशाला का निर्माण नहीं कराया था।
- 'जिज मुहम्मद शाही' पुस्तक जो नक्षत्रों संबंधी ज्ञान से संबंधित है, इसके लेखक जयपुर के शासक सवाई जयसिंह थे। इन्होंने 1728 ई. में जयपुर शहर की स्थापना की थी। जयसिंह ने अपने शासनकाल में दो अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया था। इसने युक्लिड की रचना रेखागणित के तत्व का संस्कृत में अनुवाद कराया था।
- आमेर के कछवाहा वंश के शासक जयसिंह II ने दिल्ली में खगोलीय वेधशाला का निर्माण कराया था जिसे 'जंतर-मंतर' कहते हैं।

मुगल प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन में सर्वप्रथम व्यक्ति सम्राट होता था।
- मुगल सम्राट सम्प्रभुता संपन्न शासक थे।
- राज्य की समस्त सैनिक असैनिक शक्तियाँ सम्राट में निहित थीं।

सम्राट के पदाधिकारी एक दृष्टि में

1.	वजीर	प्रधानमंत्री
2.	शाहीदीवान	वित्त मंत्री
3.	मीर बख्शी	सैन्य विभाग का अध्यक्ष
4.	सद्र-उस-सुदूर	धार्मिक मामलों का मंत्री
5.	काज़ी-उल-कुजात	न्याय विभाग का अध्यक्ष
6.	मीर-ए-सामां	शाही घराने की देखभाल करने वाला
7.	मीर-ए-आतिश	तोपखाने का प्रमुख अधिकारी
8.	मीर-ए-बहर	जलबेड़े का प्रमुख अधिकारी
9.	मीर-ए-मुंशी	पत्राचार विभाग का अधिकारी
10.	दरोगा-ए-डाकचौकी	डाक एवं गुप्तचर विभाग का प्रमुख
11.	मुहतसिब	धार्मिक अधिकारी

प्रान्तीय प्रशासन

- मुगल काल में प्रान्तीय प्रशासन को व्यवस्थित करने का श्रेय अकबर को जाता है।
- प्रान्तीय प्रशासन केन्द्रीय प्रशासन का प्रतिरूप था।

जिले का प्रशासन

- जिले को सरकार कहा जाता था।
- प्रत्येक सूबा अनेक जिले में विभक्त था।
- यहां कई अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Nitin-Gupta.com

प्रांत के पदाधिकारी

1. सूबेदार :—यह सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। इसका मुख्य कार्य कानून व्यवस्था बनाये रखना था। इसे सैनिक एवं न्यायिक अधिकार भी प्राप्त थे।
2. दीवान :—यह प्रांत का वित्त मंत्री होता था। यह अपने कार्य के लिए केन्द्र के प्रति उत्तरदायी था।
3. बख्शी :—यह प्रांतों में सेना की देखभाल और उनके निरीक्षण के लिए था।
4. सद्र :—यह प्रान्तों में धार्मिक हितों की रक्षा करता था।
5. काजी :—सूबेदार के बाद यह प्रान्त का सर्वोच्च न्यायाधीश था।

जिले के पदाधिकारी

1. फौजदार :—यह जिले का प्रमुख अधिकारी था। यह सैनिक अधिकारी होता था। जिले में कानून व्यवस्था बनाये रखना इसका मुख्य कार्य था।
2. अमल गुजार :—यह जिले का वित्त अधिकारी था।
3. काजी :—यह जिले का मुख्य न्यायाधीश था।

मनसबदारी व्यवस्था

- मनसब फारसी भाषा का शब्द है जिसका तात्पर्य है किसी व्यवस्था में किसी का स्थान अर्थात् किसी सरकारी सेवा में मनसब उसकी स्थिति का सूचक है।
- मध्य एशिया में सर्वप्रथम मंगोलों ने यह व्यवस्था शुरु की थी।
- भारत में इस व्यवस्था को अकबर 1575 में प्रारंभ किया।
- अकबर से पहले मध्यकालीन व्यवस्था में सरकारी सेवकों के तीन वर्ग थे—

  1. सैनिक अधिकारी 2. लेखा अधिकारी 3. बुद्धि जीवी वर्ग

- अकबर ने इन तीनों को मिला दिया और सभी मनसबदार कहलाये।
- अकबर ने सभी को एक-एक मनसब दिया जो उनकी स्थिति के सूचक थे।
- अबुल फजल ने उल्लेख किया है कि सम्राट ने 66 प्रकार के मनसब का निर्माण किया जो 10 से लेकर 10 हजार तक थे। बाद में मनसब बढ़ाया गया।
- मनसबदारी व्यवस्था के दो मुख्य सिद्धांत थे—

  (i) सभी मनसबदार व्यक्तिगत रूप से सम्राट के अधीन थे।

  (ii) प्रत्येक मनसबदार को दो पद दिये जाते थे—

  1. जातपद :—मनसबदार का व्यक्तिगत दर्जा था जो उसकी वरिष्ठता का सूचक था। जातपद से ही उसका वेतन निर्धारित होता था।
  2. सवारपद—इससे एक मनसबदार को कितने घोड़े तथा घुड़सवार रखना है, यह निर्धारित होता था।

मनसबदारी व्यवस्था के मुख्य बिन्दु

- अकबर ने 1575 ई. में मनसबदारी व्यवस्था प्रारम्भ की।
- जात मनसब :—यह मनसबदार का व्यक्तिगत रैंक था। इसमें उसकी वरिष्ठता एवं वेतन निर्धारित होता था।
- सवार मनसब :—इससे मनसबदार अपने अधीन कितने घोड़े एवं घुड़सवार रखेगा यह निर्धारित होता था।
- मश्रूत मनसब :—जब किसी मनसबदार को किसी शर्त के साथ अतिरिक्त मनसब दिया जाता था तो उसे मश्रूत मनसब कहा जाता था।
- दो अस्पा—जब एक सवार के लिए दो घोड़े रखने होते थे तो इसे दो अस्पा मनसब कहा जाता था।
- सिंह अस्पा—जब एक सवार के लिए तीन घोड़े रखे जाते थे तो इसे सिंह अस्पा मनसब कहा जाता था।

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- जहांगीर ने सवार पद में 'दु-अस्पा' एवं 'सिंह अस्पा' की व्यवस्था की।
- दु-अस्पा से तात्पर्य है एक सवार के पास दो घोड़े और सिंह-अस्पा से तात्पर्य है एक सवार के पास तीन घोड़े।
- मनसबदारी व्यवस्था वंशानुगत नहीं थी बल्कि योग्यता इसका मुख्य आधार था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- मुगल काल में अकबर के समय भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार हुआ।
- अकबर ने टोडरमल को शाही दीवान के पद पर नियुक्त किया।
- टोडरमल ने 1580 में आइने-ए-दहशाला नामक व्यवस्था प्रारम्भ की जो जाब्ती प्रणाली का उत्तम रूप था।
- इसके अन्तर्गत प्रत्येक परगने के कानूनगो को यह निर्देश दिया गया कि भूमि को 4 वर्गों में विभक्त करें—
  1. पोलज—प्रत्येक वर्ष खेती हो।
  2. परती—जिसमें 1 वर्ष छोड़कर खेती की जाये।
  3. चाँचर—जिसमें 3 या 4 वर्ष में खेती हो।
  4. बंजर—जिसमें 5 वर्ष से खेती न हुई हो।
- अकबर भू-राजस्व के अतिरिक्त प्रत्येक बीघा पर 10 सेर अनाज लेता था जिसे दहसेरी कर कहते थे।
- अकबर ने अजमेर में भू-राजस्व घटाकर 1/7 अथवा 1/8 कर दिया।
- औरंगजेब के समय में भू-राजस्व 1/2 लिया जाता था।

मुद्रा प्रणाली

- मुगल काल में सोने, चांदी एवं तांबे की मुद्राओं का प्रचलन था।
- मुगल कालीन मुद्रा गोल एवं चौकोर होती थी जिनमें टकसाल का नाम, सम्राट का नाम और जारी किए गए वर्ष का नाम अंकित होता था।
- सोने की सर्वाधिक प्रचलित मुद्रा इलाही थी जिसका प्रचलन अकबर ने किया था।
- चांदी की मुद्रा में रुपया महत्वपूर्ण था इसका प्रचलन शेरशाह सूरी ने किया था।
- इलाही और रुपया में 1:10 का अनुपात था।
- जलाली नामक चांदी की मुद्रा का प्रचलन अकबर ने करवाया था। यह रुपये के 1/2 के बराबर थी।
- मुगल काल में रुपया और दाम 1:40 के अनुपात में थी।
- अकबर की कुछ मुद्राओं में राम सीता का चित्र अंकित है और देवनागरी लिपि में राम सिया लिखा है।

मुगल काल में भूमि के प्रकार

1. पोलज : जिसमें हर वर्ष खेती हो।
2. परती : जिसमें एक वर्ष छोड़कर खेती हो।
3. चाँचर : जिसमें तीन या चार वर्ष में खेती हो।
4. बँजर : जिसमें खेती न हो।

मुगल सम्राटों के न्याय करने के दिन

अकबर	—	बृहस्पतिवार
जहाँगीर	—	मंगलवार
शाहजहाँ	—	बुधवार
औरंगजेब	—	बुधवार

मुगलकालीन स्वर्ण मुद्रा

1. इलाही	—सर्वाधिक लोकप्रिय स्वर्ण मुद्रा थी।
2. संसब/शहंशाह	—सबसे बड़ी मुद्रा थी (लगभग 101 तोला वजन की)
3. रहस	—संसब के आधे वजन का
4. अत्माह	—संसब के चौथाई वजन का
5. विनसत	—संसब के पाँचवें हिस्से के बराबर
6. चुगुल	—संसब के 50वें हिस्से के बराबर

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- स्थापत्य कला के क्षेत्र में मुगल काल महान युग था।
- बाबर को स्थापत्य कला से अत्यधिक प्रेम था।
- बाबर मानसिंह द्वारा निर्मित ग्वालियर के किले से बहुत प्रभावित था।
- बाबर ने पानीपत में काबुली बाग मस्जिद और सम्भल में एक जामा मस्जिद का निर्माण कराया।
- बाबर के एक अमीर अब्दुल मीर बाकी ने अयोध्या में एक मस्जिद का निर्माण कराया जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना जाता है।
- अकबर के समय में मुगल स्थापत्य का विकास हुआ।
- इसके समय हिन्दू और इस्लामी शैलियों का समन्याय हुआ।

हुमायूँ का मकबरा

- यह दिल्ली में स्थित है।
- 1564 में हुमायूँ की पत्नी हाजी बेगम की देखरेख में इसका निर्माण हुआ।
- इस मकबरे के वास्तुकार मीरक मिर्जा गयास थे।
- यह लाल पत्थर की इमारत है।

फतेहपुर सीकरी योजना

- यह योजना 1569 में प्रारम्भ हुई और 1584 में में पूर्ण हुई।
- यह नगर अकबर ने बसाया था।
- अकबर ने यहां अनेक महल बनवाये।

शाहजहांकालीन इमारतें

- इसका काल स्थापत्य काल का स्वर्ण काल था।
- शाहजहां ने 1638 में अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली बनायी और यहां पर शाहजहानाबाद नामक नगर बसाया।

जहांगीरकालीन इमारतें

अकबर का मकबरा

- यह आगरा के पास सिकंदरा में स्थित है।
- 1613 में इसका निर्माण हुआ।
- यह 5 मंजिला इमारत है तथा इसमें गुम्बद का निर्माण नहीं किया गया।
- इसमें हिन्दू, इस्लामी और बौद्ध तीनों शैलियों का मिश्रण है।

एत्मादुद्दौला का मकबरा

- 1626 में इसका निर्माण आगरा में हुआ।
- मुगलकाल की यह पहली इमारत है जो संगमरमर से निर्मित है।
- इसमें पित्रड्यूरा शैली से नक्काशी की गई है। यह यूरोप की शैली है जो बहुत महंगी है।
- भारत की यह पहली इमारत है जिसमें इस शैली का प्रयोग हुआ है।

जहांगीर का मकबरा

- यह लाहौर में सहादरा में स्थित है।
- 1628 में नूरजहां ने इसका निर्माण करवाया था।
- यह एक मंजिला इमारत है।
- चित्र कला के माध्यम से इसमें सजावट हुई है।

दिल्ली की इमारतें

दिल्ली का लाल किला :—

- 1638 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ तथा 1658 में यह बनकर तैयार हुआ।
- इस किले के अंदर अनेक इमारतों का निर्माण हुआ।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

दीवान-ए-आम :—

- यह संगमरमर से निर्मित तीन तरफ से खुली इमारत है।
- यहीं पर शाहजहां का तख्त-ए-ताउस (मयूर सिंहासन) रखा जाता था।

दीवान-ए-खास :—

- यह भी संगमरमर से निर्मित इमारत है।
- इसकी दीवार पर अमीर खुसरो का एक दोहा लिखा है जो इन इमारतों को उपयुक्त श्रद्धा प्रदान करता है—

अगर फिरदौस बररुये जमी अस्त।

हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त।।

रंग महल :—यह शाहजहां का अपना महल था। यह संगमरमर से निर्मित इमारत थी।

सीस महल :—यह शाही परिवार का स्नानागार था।

दिल्ली की जामा मस्जिद :—

- लाल किले के बाहर 1644 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ और 1658 में बनकर यह तैयार हो गई।
- यह लाल पत्थर की इमारत है।
- इसके ऊपर संगमरमर के तीन गुम्बद बने हैं।

अकबर द्वारा बनवाये गये किले

1.आगरा का किला	1565 ई.
2.लाहौर का किला	1565 ई.
3.अजमेर का किला	1573 ई.
4.अटक का किला	1581 ई.
5.इलाहाबाद का किला	1583 ई.

आगरा की इमारतें

मोती मस्जिद :

- यह आगरा के किले के अन्दर है।
- यह संगमरमर से निर्मित है।

जामा मस्जिद :

- 1648 में शाहजहां ने अपनी पुत्री जहांआरा के सम्मान में इस मस्जिद का निर्माण कराया।
- यह लाल पत्थर में निर्मित है।

ताजमहल :

- यह मुगल काल की सबसे सुंदर इमारत है।
- 1632 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ।
- 1654 में यह बनकर तैयार हुई।
- यह इमारत हुमायूं के मकबरे की शैली पर निर्मित है जिसका वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी था।
- इसकी मुख्य इमारत अष्ट भुजाकार है।
- इसमें मुमताज महल और शाहजहां की कब्र बनी है।
- इसमें मकराना से लाया गया संगमरमर प्रयुक्त किया गया है।

औरंगजेब के समय की इमारतें

राबिया-उद-दौरानी का मकबरा

- यह औरंगजेब की पत्नी थी।
- 1679 में औरंगजेब ने अपनी पत्नी की स्मृति में औरंगाबाद में इस मकबरे का निर्माण कराया था।
- इसको बीबी का मकबरा और दक्षिण का ताजमहल भी कहा जाता है।

लाहौर की बादशाही मस्जिद

- 1672 में इसका निर्माण हुआ।
- इस मस्जिद में 8 मीनारों का निर्माण किया गया।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

दिल्ली की मोती मस्जिद

- 1662 में लाल किले के अंदर इसका निर्माण किया गया।
- यह संगमरमर से निर्मित इमारत है।
- इसके अतिरिक्त मथुरा और वाराणसी में भी इसने मस्जिद बनवाई जो लाल पत्थर से निर्मित है।

मुगल चित्रकला

- बाबर को चित्रकला में रुचि थी, इसने अपनी आत्मकथा में ईरानी चित्रकार बिहजाद के चित्रों की मार्मिक समीक्षा की है।
- हुमायूँ को भी चित्रकला में रुचि थी। हुमायूँ ईरानी प्रवास के दौरान यहाँ के दो चित्रकार ख्वाजा अबदुस्समद एवं मीर सैय्यद अली के सम्पर्क में आया।
- हुमायूँ जब पुनः भारत आया तो इन दोनों ईरानी चित्रकारों को अपने साथ लाया और अपनी चित्रशाला में रखा। इस प्रकार मुगल चित्रकला की नींव हुमायूँ ने रखी।
- अकबर ने चित्रकला का एक विभाग खोला और ख्वाजा अब्दुस्समद को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया।

अकबर के समय के महत्वपूर्ण चित्रकार

1. ख्वाजा अब्दुस्समद	10. जगन
2. मीर सैय्यद अली	11. सनबल
3. मिस्किन	12. खेमकरन
4. फारुख बेग	13. तारा
5. दसवंत	14. महेश
6. बसावन	15. हरिवंश
7. केशव	16. राम
8. लाल मुकुंद	17. माधव
9. मधु	

- अबुल फजल के अनुसार अकबर की चित्रशाला में सौ से अधिक चित्रकार थे जिसमें 17 बहुत प्रसिद्ध थे। इनमें 13 हिन्दू चित्रकार थे।
- जहाँगीर के समय में मुगल चित्रकला में व्यापक परिवर्तन हुआ। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ईरानी शैली का प्रभाव कम होने लगा और यूरोपीय शैली का प्रभाव बढ़ने लगा।
- जहाँगीर के समय में प्रकृति-चित्रण मुगल चित्रकला की प्रमुख विशेषता बन गई। इसने दुर्लभ फूल-वनस्पतियों, पशु-पक्षियों का चित्र बनाने का आदेश दिया।
- जहाँगीर का सबसे प्रिय चित्रकार अबुल हसन था, जिसने इसके राज्यारोहण का चित्र बनाया है। जहाँगीर ने इसे नादिर-उल-जमाँ (अपने समय का अद्भुत) की उपाधि दी।
- जहाँगीर का दूसरा महत्वपूर्ण चित्रकार मंसूर था। यह लघु-चित्रों के चित्रण में विशिष्ट था। इसने साइबेरिया के सारस एवं लाल फूलों की बहार का चित्र बनाया। जहाँगीर ने इसे नादिर-उल-अम्र (अपने समय का श्रेष्ठ) की उपाधि दी।
- जहाँगीर के समय का एक विशिष्ट चित्रकार बिशनदास था। जहाँगीर ने इसे फारस के सम्राट एवं उसके दरबारियों का चित्र बनाने के लिए इसे फारस भेजा था।

जहाँगीर के समय के चित्रकार

1. अबुल हसन	6. मनोहर
2. मंसूर	7. मु. नादिर
3. फारुख वेग	8. मुराद
4. बिशनदास	9. गोवर्धन
5. दौलत	

- शाहजहाँ को अपना दैवी प्रकार का चित्र बनवाने का बहुत शौक था, जैसे सिर के पीछे प्रकाश का गोला।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- शाहजहाँ जब अपनी स्थापत्य योजनाओं में व्यस्त हो गया तो मुगल चित्रकला का पतन प्रारम्भ हो गया।

शाहजहाँ के समय के चित्रकार

1. गोवर्धन
2. मु. नादिर
3. बालचन्द्र
4. अनूप
5. चतुर
6. विचित्र
7. चिन्तारमण

- औरंगजेब धार्मिक कारणों से चित्रों को पसंद नहीं करता था। अतः मुगल चित्रकला का पतन हो गया।
- मुगल चित्रकार रोजी रोटी की तलाश में राजपूताना प्रदेश एवं पहाड़ी प्रदेशों के राजाओं के यहाँ शरण ली।
- इस प्रकार राजस्थानी शैली एवं पहाड़ी शैली का विकास हुआ।

राजस्थानी शैली

1. **मेवाड़ शैली** : राणा जगत सिंह के समय में अत्यधिक उत्कर्ष हुआ। मनोहर इस शैली का चित्रकार था।
2. **बूँदी शैली** : राजा सुरजन सिंह के समय में इस शैली का उत्कर्ष हुआ।
3. **कोटा शैली** : यह बूँदी शैली से जन्मी शैली है।
4. **जयपुरी शैली** : सवाई प्रताप सिंह के समय में इसका अत्यधिक उत्कर्ष हुआ।
5. **बीकानेरी शैली** : रुनकुद्दीन, सहाबुद्दीन, मस्तराम प्रमुख चित्रकार थे।
6. **किशनगढ़ शैली** : राजा सावंत सिंह के समय में सर्वाधिक उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार निहालचन्द्र था।

पहाड़ी शैली

1. **बशोली शैली** : यहाँ के राजा कृपाल पाल के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार देवीदास था।
2. **कांगड़ा शैली** : राजा संसारचन्द्र के समय में इसका उत्कर्ष हुआ।
3. **जम्मू शैली** :—राजा रणजीत देव के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली का प्रमुख चित्रकार नयनसुख एवं भजनशाह थे।
4. **गढ़वाल शैली** :—राजा पृथपाल के समय में इसका उत्कर्ष हुआ। इस शैली के प्रमुख चित्रकार शामनाथ एवं हरदास थे।

मुगलकालीन संगीत-कला

- मुगलकाल में संगीत कला का अत्यधिक विकास हुआ।
- बाबर को संगीतकला में रुचि थी। वह आराम के क्षणों में संगीत सुनना पसंद करता था।
- हुमायूँ को भी संगीत में अत्यधिक रुचि थी। इसके दरबार 29 गायक एवं वादक रहा करते थे। इसने बच्चा नामक संगीतकार को माँडू से बुलाया था।
- अकबर के समय में संगीत का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अकबर ने लाल कुलवंत नामक उस्ताद से हिन्दुस्तानी गायकी का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। अकबर स्वयं बहुत अच्छा नगाड़ा बजाता था।
- अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में 36 संगीतकारों का उल्लेख किया है। जिनमें तानसेन सर्वप्रमुख थे।
- तानसेन का वास्तविक नाम रामतनु पांडेय था। यह ग्वालियर के रहने वाले थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अकबर के समय के संगीतकार

1. मश्शाद
2. हिरात
3. किपचाक
4. तानसेन
5. रामदास
6. सुभान मियाँ
7. मियाँ चाँद
8. बाजबहादुर
9. विचित्र खाँ
10. सरोद खाँ
11. रंगसेन
12. अब्दुर्रहीम खानखाना

शाहजहाँ के समय के प्रमुख संगीतकार

1. पं. जगन्नाथ
2. लाल खाँ
3. दुरंग खाँ
4. सुखसेन

जहाँगीर के समय के संगीतकार

1. जहाँगीर दाद
2. परवेज दाद
3. हम्जा
4. विलास खाँ
5. छत्र खाँ
6. शौकी

- शाहजहाँ स्वयं भी एक अच्छा गायक था। इसके समय में ध्रुपद गायन का अत्यधिक विकास हुआ।
- इसने लाल खाँ को 'गुन समुन्दर' की उपाधि दी थी।
- औरंगजेब रूढ़िवादी एवं धार्मिक दृष्टि से कट्टर बादशाह था, धार्मिक कारणों से यह संगीत को पसंद नहीं करता था।
- औरंगजेब स्वयं वीणा बजाता था।

मुगलकालीन साहित्य

ग्रंथ का नाम	लेखक	विशेषता
1. तुज्क-ए-बाबरी (तुर्की भाषा में)	बाबर	यह बाबर की आत्मकथा है। इससे बाबर के बारे में जानकारी मिलती है।
2. हुमायूँनामा (फारसी में)	गुलबदन बेगम	यह हुमायूँ की सौतेली बहन थी। इन्होंने इसमें अपना संस्मरण लिखा है।
3. तारीख-ए-शेरशाही (फारसी में)	अब्बास खाँ शरवानी	शेरशाह के जीवन का वर्णन है।
4. अकबरनामा	अब्दुल्ला फैजी सरहिन्दी	यह दूसरी अकबरनामा लिखी गई है।
5. अकबरनामा (फारसी में)	अबुल फजल	इसमें अकबर के शासन के 46 वर्षों का विवरण प्राप्त होता है। अकबरनामा तीन खंडों में विभक्त है। इसका तीसरा खंड आइन-ए-अकबरी है जिसमें अकबर के प्रशासनिक नीतियों का वर्णन है।
6. तारीख-ए-हक्की (फारसी में)	अब्दुल हक देहलवी	इसमें अकबर की धार्मिक नीति की कड़ी आलोचना की गई है।
7. शाहजहाँनामा (फारसी में)	मुहम्मद सादिक खाँ	शाहजहाँ का विवरण है।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Nitin-Gupta.com

मुगलकाल में अनुवादित ग्रंथ

- अकबर ने एक अनुवाद विभाग स्थापित किया और फैजी को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया।
- महाभारत का फारसी अनुवाद रज्मनामा के नाम से हुआ। बदायूँनी एवं टर्क खाँ के सहयोग से इसका अनुवाद हुआ।
- रामायण का फारसी भाषा में अनुवाद बदायूँनी ने किया।
- अथर्ववेद का फारसी भाषा में अनुवाद हाजी इब्राहिम सरहिन्दी ने किया।
- राजतरंगिणी का फारसी भाषा में अनुवाद मौलाना सीरी ने किया।
- गणित की पुस्तक लीलावती का फारसी में अनुवाद फैजी ने किया।
- पंचतंत्र का फारसी अनुवाद अबुल फजल ने अनवर-ए-सुहायली नाम से किया।
- कालिया दमन का फारसी अनुवाद अबुल फजल ने आयगर-दानिश नाम से किया।
- भागवत पुराण का फारसी अनुवाद टोडरमल ने किया।
- सिंहासन बत्तीसी का फारसी अनुवाद बदायूँनी ने किया।

मुगलकाल में आये विदेशी यात्री

1. **राल्फ फिच** (1583-91 ई.) : यह अकबर के समय में पहुँचने वाला अंग्रेज यात्री था। इसने फतेहपुर सीकरी एवं आगरा की तुलना लंदन से की है।
2. **कैप्टन हाकिन्स** (1608-11 ई.) : यह ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रतिनिधि के रूप में जहाँगीर के दरबार में पहुँचा। जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब प्रदान किया।
3. **सर टामस रो** (1615-18 ई.) : यह ब्रिटिश सम्राट जेम्स I के राजदूत के रूप में जहाँगीर के दरबार में आया था।
4. **पित्रो-डेलावले** (1623-26 ई.) : यह इटालवी यात्री 1623 ई. में सूरत पहुँचा था। इस समय जहाँगीर शासक था।
5. **पीटर मुंडी** (1630-34 ई.) : यह इटालवी यात्री शाहजहाँ के शासनकाल में भारत की यात्रा की।
6. **ट्रैवर्नियर** : यह इटालवी यात्री 1638-63 ई. के बीच भारत की छह बार यात्रा की। हीरा के व्यापारी होने के कारण हीरा व्यापार के बारे में इसका विवरण महत्वपूर्ण है।
7. **मनूची** (1653-1708 ई.) : यह इटालवी यात्री यहाँ आकर शाहजहाँ के अन्तर्गत दाराशिकोह की सेना में तोपची की नौकरी कर ली। बाद में चिकित्सक का पेशा अपनाया।
8. **बर्नियर** (1656-1707 ई.) : शाहजहाँ के समय में भारत आया शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के युद्धों का वर्णन किया है।

मराठा

शिवाजी (1627–80)

- शिवाजी का जन्म 1627 में शिवनेर के दुर्ग में हुआ था।
- इनके पिता शाहजी भोसले बीजापुर के सुल्तान के यहाँ प्रथम श्रेणी के सरदार थे।

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- शाहजी के पास पूना एवं बंगलौर की जागीर थी।
- शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था। शाहजी और जीजाबाई में कुछ मन-मुटाव होने के कारण बंगलौर रहते थे और जीजाबाई पूना रहती थीं।
- शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास थे। शिवाजी के जीवन में इनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

शिवाजी के अभियान

- शिवाजी ने अपने अभियानों की शुरुआत बीजापुर के विरुद्ध 1646 में की थी।
- 1646 में इन्होंने सर्वप्रथम बीजापुर के सुल्तान से तोरण का किला विजित किया और इसी वर्ष इन्होंने मुरूम्बगढ़ का किला जीता।
- 1647 में इन्होंने कोंडाना (सिंहगढ़) एवं चाकन का किला जीता।
- 1657 में शिवाजी का पहली बार मुगलों से संघर्ष हुआ। इसमें मराठा सेना को पीछे हटना पड़ा।
- अफजल खां बीजापुर का सेनापति था जो शिवाजी को समाप्त करने के उद्देश्य से प्रतापगढ़ के जंगल में अकेले सन्धि का प्रस्ताव रखा था और यहाँ पर शिवाजी ने बघनखे की सहायता से शिवाजी ने अफजल खां का वध किया।
- 1664 में शिवाजी ने सूरत की प्रथम लूट की। इस लूट से इन्हें लगभग 1 करोड़ रुपये की सम्पत्ति प्राप्त हुई।
- 1665 में औरंगजेब ने शिवाजी का दमन के लिए राजा जयसिंह को नियुक्त किया।
- राजा जयसिंह ने शिवाजी के अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया और अन्ततः 15 जून 1665 को राजा जयसिंह और शिवाजी के बीच पुरन्दर की सन्धि हुयी।
- इस सन्धि के द्वारा शिवाजी ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को दे दिए तथा शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को 5 हजार का मनसबदार नियुक्त किया गया।
- जयसिंह के कहने पर शिवाजी 1666 में औरंगजेब से मिलने आगरा आए। शिवाजी के गैर अनुशासनिक व्यवहार से औरंगजेब ने इन्हें बन्दी बना कर नजरबन्द कर दिया। अन्ततः शिवाजी आगरा से भागने में सफल हुए।
- 1667 में शिवाजी ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली।
- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि दी।

शिवाजी का प्रशासन

- शिवाजी का राजस्व सिद्धान्त प्राचीन हिन्दू सिद्धान्तों पर आधारित था। क्षत्रपति इनकी उपाधि थी। इनकी प्रशासनिक भाषा मराठी थी।

शिवाजी का राज्याभिषेक

- शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनायी।
- 6 जून 1674 को इनका राज्याभिषेक हुआ। राज्याभिषेक काशी के ब्राह्मण विशेश्वरभट्ट (गागाभट्ट) ने वैदिक विधि विधान से सम्पन्न कराया।
- राज्याभिषेक के 11 दिन बाद जीजाबाई का निधन हो गया। अतः 24 सितम्बर 1674 को शिवाजी ने अपना दूसरा राज्याभिषेक तान्त्रिक विधि विधान से कराया।
- यह राज्याभिषेक निश्चलपुरी गोसांई ने कराया।
- 1680 में रायगढ़ में शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

सदस्य

1. **पेशवा** : प्रशासनिक कार्य करना इसका मुख्य कार्य था। प्रत्येक राजकीय आज्ञाओं में सम्राट के हस्ताक्षरों के नीचे पेशवा के हस्ताक्षर व मोहर आवश्यक थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

2. **अमात्य/पंत/मजमुआदार** : यह राज्य का वित्त मंत्री था■।

7. **न्यायाधीश** :—यह राजा के बाद मुख्य न्यायाधीश था।

8. **पंडितराव** : यह धार्मिक मामलों में राजा का मुख्य सलाहकार था। यह राज्य की तरफ से ब्राह्मणों, मन्दिरों को अनुदान देता था।

भू-राजस्व व्यवस्था

- राजकीय आय का मुख्य श्रोत भूमि कर था।
- प्रारम्भ में शिवाजी ने 1/3 भाग भू-राजस्व वसूल किया। बाद में जब इन्होंने आन्तरिक करों को समाप्त कर दिया तब 2/5 भाग भू-राजस्व वसूल किया।
- राजकीय आय का दूसरा श्रोत चौथ था। शिवाजी यह कर पड़ोसी शत्रु राज्यों से वसूल करते थे। यह उस राज्य की आय का 1/4 होता था।
- इसके अतिरिक्त शिवाजी सरदेशमुखी नामक कर पड़ोसी शत्रु राज्यों से वसूल करते थे। यह राज्य की आय का 1/10 होता था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

संभाजी (1680–89)

- संभाजी उत्तर भारत के एक ब्राह्मण कवि कलश को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- मुगल सम्राट औरंगजेब से इनका संघर्ष हुआ। 1689 में औरंगजेब ने संभाजी तथा कवि कलश को बन्दी बना लिया और दोनों की हत्या कर दी।

राजाराम (1689–1700)

- राजाराम ने अपनी राजधानी दक्षिण में जिंजी को बनाया।
- इन्होंने निरन्तर मुगलों से संघर्ष किया और आंशिक सफलता प्राप्त की।

शिवाजी II (1700–1707)

- यह राजाराम के अल्प वयस्क पुत्र थे। इनकी माता ताराबाई इनकी संरक्षिका थी।
- ताराबाई मुगलों से मराठा राज्य छीनने में सफल रहीं।
- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद शाहू आजम की कैद में था। इसने शाहू को रिहा कर दिया।
- 1707 में खेद के मैदान में ताराबाई पराजित हुई और कोल्हापुर चली गयीं और शिवाजी-II के नाम से यही से शासन करने लगीं।

शाहू छत्रपति (1708–49)

- शाहू ने सतारा को अपनी राजधानी बनाई।
- शाहू के समय में मराठे भारत की प्रथम श्रेणी की शक्ति में स्थान पा सके। इसके लिए शाहू के पेशवा ही उत्तरदायी थे।

मराठा छत्रपति—एक दृष्टि में

1.शिवाजी	1674 - 1680 ई.
2.शंभाजी	1680 - 1689 ई.
3.राजाराम	1689 - 1700 ई.
4.शिवाजी-II	1700 - 1707 ई.
5.शाहू-I	1708 - 1749 ई.
6.रामराजा	1749 - 1777 ई.
7.शाहू-II	1777 - 1808 ई.
8.प्रताप सिंह	1808 - 1839 ई.
9.शाहजी	1839 - 1848 ई.

मराठा पेशवा—एक दृष्टि में

1.बालाजी विश्वनाथ	1713 - 1720 ई.
2.बाजीराव-I	1720 - 1740 ई.
3.बालाजी बाजीराव	1740 - 1761 ई.
4.माधव राव	1761 - 1772 ई.
5.नारायण राव	1772 - 1774 ई.
6.माधवराव नारायण	1774 - 1795 ई.
7.बाजीराव-II	1795 - 1818 ई.

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

पेशवा काल

बालाजी विश्वनाथ (1713–20)

- यह शाहू के पहले पेशवा थे। इन्होंने मराठों की शक्ति को महाराष्ट्र में सुदृढ़ किया।
- इनकी मुख्य उपलब्धि 1719 में मुगलों से की गयी सन्धि थी। यह सन्धि मुगल दक्षिण के मुगल सुबेदार हुसैल अली ने मुगल सम्राट की ओर से शाहू के साथ की थी।

बाजीराव प्रथम (1720–40)

- यह बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे। इसी समय से पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- यह पहले मराठे हैं जिन्होंने उत्तर भारत में साम्राज्य विस्तार किया। इन्होंने मुगलों को पराजित कर मालवा, गुजरात और बुन्देलखण्ड को जीतकर मराठा साम्राज्य में सम्मिलित किया।
- इन्हीं के समय में मराठों के अनेक राजवंशों की स्थापना हुई जैसे—
  - रानोजी सिंधिया ने मालवा के एक हिस्से में सिंधिया वंश की स्थापना की। प्रारम्भ में इनकी राजधानी उज्जैन थी बाद में ग्वालियर थी।
  - इसी समय मल्हारराव होल्कर मालवा के दूसरे भाग में होल्कर वंश की स्थापना की। इनकी राजधानी इन्दौर थी।
- यह मस्तानी नामक मुस्लिक महिला से प्रेम करते थे।

बालाजी बाजीराव (1740–61)

- इन्हीं के समय में शाहू जी की 1749 में मृत्यु हुई। इसके बाद छत्रपति के सारे अधिकार पेशवा में निहित हो गये।
- इनके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना पानीपत का तृतीय युद्ध था। 1761 में यह युद्ध अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच लड़ा गया।
- मराठा सेना का नेतृत्व सदाशिवराव भाऊ एवं विशवासराव ने किया। इसमें मराठे पराजित हुए।
- बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था।
- 1750 ई. में संगोला समझौता द्वारा छत्रपति के सारे अधिकार पेशवा में निहित हो गये।
- अब छत्रपति नाममात्र का शासक होता था और सतारा में बन्दी जीवन व्यतीत करता था।

पानीपत का तृतीय युद्ध

- पानीपत का तृतीय युद्ध अफगान शासक अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच में लड़ा गया।
- इस युद्ध का मुख्य कारण दिल्ली एवं पंजाब की राजनीति में मराठों का हस्तक्षेप था।
- इस युद्ध में मराठों की भीषण पराजय हुई। महाराष्ट्र का कोई परिवार ऐसा नहीं था जो अपने स्वजन की मृत्यु पर शोक न मनाया हो।
- यह युद्ध मराठों के लिए राष्ट्रीय विपत्ति के समान थी।
- इस युद्ध का नेतृत्व पेशवा बालाजी बाजीराव का चचेरा भाई सदाशिवराव भाऊ एवं पेशवा का पुत्र विश्वास राव कर रहे थे।
- मराठों की ओर से तोपखाने का नेतृत्व इब्राहिम गार्दी ने किया।
- इस युद्ध का आँखों देखा वर्णन काशीराज पंडित ने किया है।

◆◆◆

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

📚 हमारी App पर उपलब्ध Best Course

- Best PDF Notes in Hindi – All Subjects
- Best PDF Notes in English – All Subjects
- GK Trick by Nitin Gupta
- General Knowledge PDF – English Medium
- Current Affairs 2024-25
- SSC CGL 2025
- SSC CHSL 2025
- RRB NTPC 2025
- RRB Group D 2025
- RRB ALP 2025

- SSC GD Constable 2025
- CTET Paper 1 (Class I-V)
- Bihar Police Constable 2025
- RPF SI and Constable 2025
- CPCT Course 2025 in Hindi
- MPTET Varg – 3
- Computer Course for Exams
- सामान्य हिन्दी Course
- 10000+ GK Questions (Hindi)
- बाल विकास व शिक्षा शास्त्र